विशेषताओं संबंधी आँकड़े वर्तमान शताब्दी की देन है। भारत में पिछली दशाबदी के सफल जनगणना के पश्चात् 1881 एवं 1891 ई० में क्रमशः दूसरी तथा तीसरी बार जनगणना की गई। परन्तु जनसंख्या में वृद्धि की दर बहुत धीमी रही। 1891 ई० से 1921 ई० के मध्य भारत में विभिन्न महामारी, बीमारियाँ, अकाल आदि आपदाएँ सक्रिय रहीं। इस कारण जनसंख्या में वृद्धि धीमी गति से हुई। वर्ष 1891 से 1991 के मध्य तीस वर्षों में मात्र 1.20 करोड़ जनसंख्या की वृद्धि हुई।

1901 से 1921 के मध्य जनसंख्या में वृद्धि मात्र 5.4 प्रतिशत थी। इस अवधि में जनसंख्या प्रायः स्थिर रही। 1910-11 की अवधि में जन्म दर 49 तथा मृत्यु दर 43 व्यक्ति प्रति हजार थी। 1911-1921 के मध्य जन्म दर 48 तथा मृत्यु दर 47 व्यक्ति प्रति हजार थी। यही कारण है कि इस अवधि में जनसंख्या में वृद्धि नहीं हुई। 1921-1931 के मध्य 2.76 करोड़ (11.00% प्रतिशत), 1931-1941 के मध्य 3.97 करोड़ करोड़ (14.22 प्रतिशत) की वृद्धि हुई। 1921-31 के मध्य जन्म एवं मृत्यु दर क्रमशः 46 एवं 36 व्यक्ति प्रति हजार थी। 1941-1951 के मध्य भारत की जनसंख्या 4.24 करोड़ (13.31% प्रतिशत) की वृद्धि हुई। इस अवधि में जन्म एवं मृत्यु दर क्रमशः 40 तथा 27 व्यक्ति प्रति हजार थी। सामान्यतः 1951 ई० को Great divide कहा जाता है क्योंकि 1921 से 1951 के मध्य जनसंख्या में 11 करोड़ की वृद्धि हुई। इस अवधि में जनसंख्या की वृद्धि नियमित रूप में हुई। इस अवधि में जन्म एवं मृत्यु दर में कुछ अंतर देखने को मिलता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1951-1961 के मध्य 7.8 करोड़ जनसंख्या (21.6 प्रतिशत) की वृद्धि हुई। इस अवधि में जन्म दर एवं मृत्यु दर क्रमशः 42 एवं 23 व्यक्ति प्रति हजार रही। 1961 से 1971 ई० के मध्य 24.8 प्रतिशत तथा जनसंख्या 10.8 करोड़ की वृद्धि हुई।

इस अवधि में जन्म तथा मृत्यु दर क्रमशः 41 एवं 19 व्यक्ति प्रतिहजार थी। यह काल तीव्रता से जनसंख्या वृद्धि का काल कहा जाता है।

1971 से 1981 ई० के मध्य वास्तविक जनसंख्या में वृद्धि 13.52 करोड़ (24.6 प्रतिशत) हुई। इस काल में जन्म एवं मृत्यु दर क्रमशः 38 एवं व्यक्ति 15 प्रति हजार रही। 1981 से 1991 ई० के मध्य जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि लगभग प्रतिशत हुई। इस काल में जन्म एवं मृत्यु दर क्रमश 30 एवं 10 रही। इस अवधि में 16.66 करोड़ जनसंख्या की वृद्धि हुई।

1991 से 2001 ई० के मध्य जनसंख्या 18.17 करोड़ की वृद्धि हुई। इस अवधि में जनसंख्या में मुख्यतः 21.34 प्रतिशत वृद्धि हुई। इस अंतराल में जन्म दर 26 एवं मृत्यु दर 9 व्यक्ति प्रति हजार रही। जनसंख्या की वृद्धि को आरेख एवं तालिका 5.3.1 संख्या में दर्शाया गया है।

तालिका सं. 5.3.1

भारत में जनसंख्या की वृद्धि तथा जन्म एवं मृत्यु दर

जनगणना वर्ष	जनसंख्या करोड़ में	दशाब्दी वृद्धि %	वार्षिक वृद्धि % औसत	जन्म दर (प्रति हजार)	मृत्यु दर प्रति हजार	प्राकृतिक वृद्धि दर
1901	23.83	-	-	-	-	-
1911	25.20	5.75	0.56	4.9	4.3	6
1921	21.13	-0.31	-0.03	48	47	1
1931	27.89	11.00	1.04	46	36	10
1941	31.86	14.22	1.33	45	31	14
1951	36.10	13.31	1.25	40	27	13
1961	43.92	21.25	1.96	42	30	19
1971	54.81	24.80	2.20	41	19	22
1981	68.33	24.66	2.22	38	15	23
1991	84.63	23.85	2.14	30	10	20
2001	102.70	21.34	1.95	26	9	17

स्रोत : भारत की जनगणना 2001

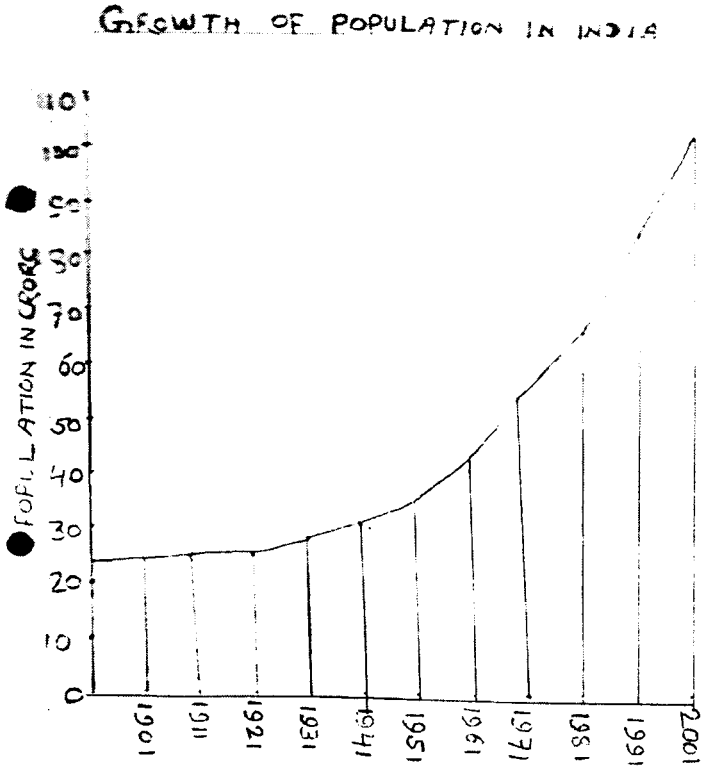

चित्र 5.3.1

1.4 जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक प्रतिरूप (Spatial Patterns of Population Growth)

1901 से 2001 ई० के मध्य सर्वाधिक वृद्धि नागालैण्ड (64.4) प्रतिशत और न्यूनतम केरल (9.4 प्रतिशत) हुई। देश के विभिन्न राज्यों में वृद्धि की दर समान नहीं रही। कुछ राज्यों में औसत से अधिक तथा कुछ राज्यों में कम जनसंख्या की वृद्धि हुई। आमतौर पर औसत से अधिक जनसंख्या में वृद्धि मुख्य रूप से असम (18.85 प्रतिशत) गुजरात (22.48 प्रतिशत) राजस्थान (28.23 प्रतिशत), जम्मू-कश्मीर (29.04 प्रतिशत), हरियाणा (28.06 प्रतिशत), मेघालय (29.94 प्रतिशत), सिक्किम (32.98 प्रतिशत), बिहार (28.43 प्रतिशत), उत्तरप्रदेश (25.80 प्रतिशत), मध्यप्रदेश (24.34 प्रतिशत), तथा चंडीगढ़ (40.23 प्रतिशत) में वृद्धि हुई। कछ ऐसे राज्यों का नाम उल्लिखित है जिनमें औसत से कम जनसंख्या की वृद्धि हुई इनमें पश्चिम बंगाल (17.84 प्रतिशत), पंजाब (19.76 प्रतिशत), उड़ीसा (15.94 प्रतिशत), तमिलनाडु (17.25 प्रतिशत) तथा कर्नाटक (17.25 प्रतिशत), आंध्रप्रदेश में (13.86 प्रतिशत) आदि राज्यों को सम्मिलित किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि के स्थानिक प्रतिरूप को तालिका संख्या 5.32 एवं मानचित्र सं. 5.3.1 में दर्शाया गया है।

तालिका सं. 5.3.2

भारत में जनसंख्या वृद्धि दर प्रतिशत में परिवर्तन

	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	1981-91	1991-2001
1.	आंध्र प्रदेश	24.20	13.86
2.	अरूणाचल प्रदेश	36.83	26.21
3.	असम	24.24	18.85
4.	बिहार	23.38	28.43
5.	छत्तीसगढ़	25.73	18.06
6.	गोवा	16.08	14.89
7.	गुजरात	21.19	22.48
8.	हरियाणा	27.41	28.03
9.	हिमाचल प्रदेश	20.79	17.53
10.	जम्मू एवं काश्मीर	30.34	29,06
11.	झारखंड	24.03	23.19
12.	कर्नाटक	21.12	17.25

	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	1981-91	1991-2001
13.	केरल	14.32	9.42
14.	मध्यप्रदेश	27.24	24.34
15.	महाराष्ट्र	25.73	22.57
16.	मणिपुर	29.29	30.02
17.	मेघालय	31.86	29.94
18.	मिजोरम	39.70	24.18
19.	नागालैंड	56.08	64.41
20.	उड़ीसा	20.06	15.94
21.	पंजाब	20.81	19.76
22.	राजस्थान	28.44	28.33
23.	सिक्किम	28.47	32.98
24.	तमिलनाडु	15.39	11.19
25.	त्रिपुरा	34.30	15.74
26.	उत्तर प्रदेश	25.55	25.80
27.	उत्तराचंल	24.23	19.20
28.	पश्चिम बंगाल	24.73	17.84
केन्द्रशासित प्रदेश-			
1.	अंडमान निकोबार	48.70	46.94
2.	चंडीगढ़	42.16	40.33
3.	दादर एवं नगर हवेली	33.57	59.20
4.	दमन एवं द्वीप	28.62	55.59
5.	दिल्ली	57.45	46.31
6.	लक्षद्वीप	28.43	17.19
7.	पांडिचेरी	33.64	20.56
	भारत	23.86	21.34

स्रोत : भारत की जनगणना 2001

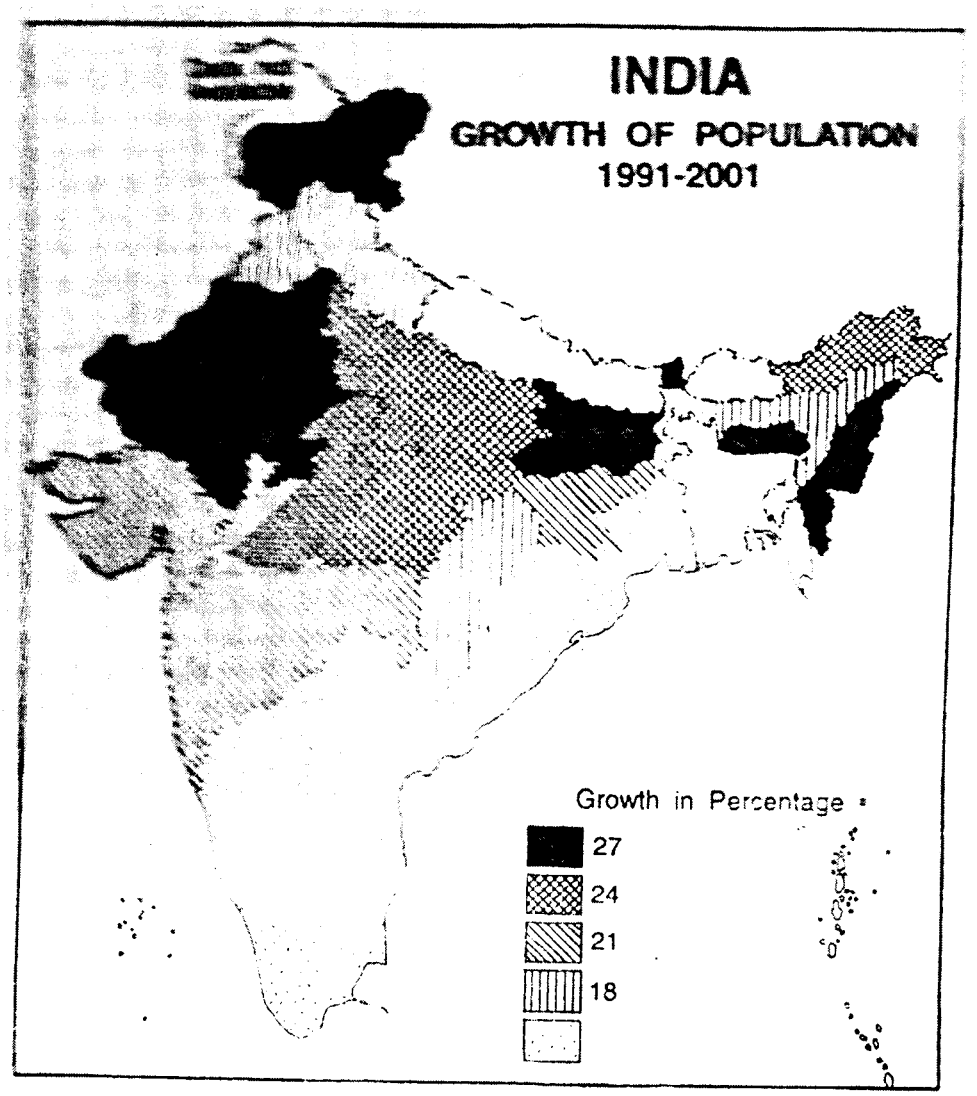

चित्र 5.3.2

1891 से लेकर 1991 के मध्य भारत विभिन्न आपदाओं से जूझता रहा। इस अवधि में भीषण अकाल, महामारी (हैजा, प्लेग, इन्फ्लूऐंजा, मलेरिया, डायरिया आदि) आदि आपदाओं के शिकार होने के कारण जनसंख्या की वृद्धि प्रभावित हुई। इस काल में राजवाड़ों में होनेवाले युद्ध के साथ-साथ प्रथम विश्वयुद्ध का भी असर यहाँ की जनसंख्या की वृद्धि पर पड़ा। फलत: जनसंख्या की अपार क्षति हुई यही कारण है कि वृद्धि बहुत कम हुई। 1911 से 1921 ई० के मध्य सर्वाधिक भयानक बीमारियों के कारण करोड़ों लोग काल-कलवित हो गए। फलत: जनसंख्या की वृद्धि के ह्रास हुआ। परन्तु 1921 ई० के बाद जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही। इस अवधि में सन् 1943 ई० में बंगाल में भीषण अकाल का प्रकोप हुआ उसके बाद आंशिक प्रादेशिक सूखा का प्रभाव पड़ा। अत: 1951 ई० के पश्चात् जनंसख्या में निरन्तर वृद्धि होती गई जिसे तालिका संख्या 5.3.1 में दर्शाया गया है।

1951 ई० के पश्चात् जनसंख्या में वृद्धि के निम्न कारण हैं :-

(I) सन् 1951 ई० के बाद देश के विभिन्न भागों में भारतीय सरकार द्वारा सिंचाई के साधनों पर बल दिया गया तथा देश के प्राय: हर राज्यों में सिंचाई योजनाएं तैयार की गई तथा उन्हें क्रियान्वित भी किया गया। फलत: सिंचित क्षेत्रफल में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हुई एवं खाद्यान्न तथा व्यवसायिक फसलों का उत्पादन हुआ। इसके अलावा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, यातायात के साधनों का विकास, अनुशासित एवं विश्वसनीय प्रशासन तथा कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्रों में आशाजनक विकास हुआ। फलत: सभी राज्यों में जीविकोपार्जन के साधनों में वृद्धि हुई। चिकित्सा के उत्तम प्रबन्ध के कारण मृत्यु दर घट गई किन्तु जन्म दर स्थिर रही। 1891-1901 में यह दर क्रमश: 41 एवं 49 थी जो क्रमागत रूप में गिरकर 8.7 तथा 26.1 रह गयी। 1991 ई० में मृत्यु दर 9.8 एवं जन्म दर 29.5 प्रति हजार रही। यदि विश्व के विकसित देशों के साथ तुलना की जाय तो पता चलता है कि उन देशों की तुलना में भारत में जन्म दर अधिक है। वर्तमान समय में जन्म दर में आने की आशा है। 2001 में जन्म दर एवं मृत्यु दर क्रमश: 26.1 एवं 8.7 प्रति हजार है।

(II) भारत में विवाह परम्परा धर्म एवं पारिवारिक कारणों से अनिवार्य है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व लड़की की विवाह की औसत आयु मात्र 12-13 वर्ष ही थी। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में यह परम्परा छिट-फुट रूप से चलती है परन्तु इसे दूर करने के लिए सरकार तथा समाज द्वारा काफी ध्यान दिया गया है। अब लड़के एवं लड़कियों की विवाह के लिए निर्धारित उम्र 21 एवं 18 वर्ष किया गया है। कम उम्र में विवाह होने पर (महिलाओं का शरीर जब तक पूर्ण विकसित नहीं होता तब तक वह बीमार रहती है) अधिक बच्चे भी होते हैं। अन्य धर्मों की तुलना में ईसाई धर्मावलम्बियों में विवाह की उम्र सापेक्षिक रूप में अधिक होती है। सामान्यत: एक भारतीय स्त्री 15 से 45 वर्षों की आयु में 5 से 6 बच्चों की माँ बन जाती है। धार्मिक सामुदायिक दृष्टिकोण से हिन्दुओं की तुलना में मुस्लिम स्त्रियाँ अधिक बच्चों को जन्म देना उचित समझती है। इससे जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

हिन्दू परिवारों में परिवार नियोजन के प्रति अधिक जागरूकता आयी है परन्तु मुस्लिम परिवारों में ऐसी जागरूकता का अभाव पाया जाता है। वर्तमान समय में गाँवों, कस्बों, शहरों, नगरों एवं महानगरों में सौभाग्यवश स्त्री शिक्षा आर्थिक विकास तथा स्वावलम्बन जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है जिसका इनपर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

(III) भारत की आर्थिक अवनत दशा, पिछड़ेपन तथा दरिद्रता का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर पड़ता है। प्राय: दरिद्र एवं निर्धन को अधिक बच्चे जन्म लेते हैं। यहाँ दरिद्रता का प्रभाव भी चतुर्दिक दृष्टिगत होता है।

(IV) भारत में शिक्षा का अभाव है। 2001 की जनगणना के अनुसार 65.4 प्रतिशत भारतीय शिक्षित हैं। यहा जीवन स्तर बहुत ही नीचा है। अशिक्षा एवं अंधविश्वास के कारण यहाँ के लोग अधिक संतान उत्पन्न करना अपना धर्म समझते हैं। यहाँ अधिकांश व्यक्तियों को विश्वास है कि ''संतान प्रभु की

देन है इसमें हमारा कोई दायित्व नहीं है।'' फलत: अधिक बच्चों की संख्या में वृद्धि होती जाती है। परिवार नियोजन कार्यक्रम में अशिक्षित मध्यम तथा निम्न श्रेणी के लोग अपना हाथ पूर्णरूपेण नहीं बताते हैं, अर्थात वे परिवार नियोजन नहीं कराना ही उचित समझते हैं।

(V) भारत में अभी तक सस्ते और स्वास्थ्यवर्द्धक मनोरंजन के साधनों का अभाव पाया जाता है। इससे निर्धन एवं अशिक्षित सुदाय के पास विकास ही एकमात्र मनोरंजन का साधन जाता है। फलत: उन लोगों में संतानोत्पति की भावना को ही अधिक बल मिलता है।

(VI) 1891-1901 में एक स्त्री-पुरुष की औसत आयु 23 और 24 वर्ष थी। परन्तु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में अधिक सुधार के कारण यह क्रमश: 59 तथा 58.6 वर्ष हो गयी। वर्तमान समय में औसत आयु बढ़कर 65 वर्ष हो गयी। इससे संतानोत्पति काल में वृद्धि हुई जिसका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर पड़ा।

1.5 जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय (Remedy Control Growth of Population)

तालिका संख्या 05.03.01 के अध्ययन के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि भारत में जनसंख्या की वृद्धि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तीव्र गति से हो रही है। यदि इसी अबाध गति से जनसंख्या में वृद्धि होती रहेगी तो भारत में निकट भविष्य में जनाधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी तथा खाद्य संकट उत्पन्न हो जायेगा। अत: जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित करना आवश्यक है जिसके लिए निम्न उपाय अपनाये जा सकते हैं :-

(1) विवाह की आयु में वृद्धि करना :-

लड़के एवं लडकियों में विवाह की न्यूनतम उम्र सीमा में वृद्धि करने पर वैवाहिक जीवन में अपेक्षाकृत कम बच्चे उत्पन्न होंगे। इसका दूसरा लाभ यह है कि उन्हें उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान होगा। फलत: भारत में शिक्षा का प्रसार होगा एवं संतानोत्पति को प्रोत्साहन कम मिलेगा। सामान्यत: 18 एवं 21 वर्षसे कम उमं वाले वैवाहिक बंधन में बंधने वाले स्त्री-पुरुषों पर कानूनी कार्रवाई (कार्यवाही) करनी चाहिए। प्राय: इस नियम का उल्लंघन कृषक, पशुपालक, श्रमिक, जनजाति, अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अल्प विकसित समाज में अभी भी किया जाता है। इस पर सरकार को कठोर कदम उठाना चाहिए।

(II) नारी शिक्षा तथा नारी स्वतंत्रता :-

1991 एवं 2001 ई० में भारत में कुल साक्षरता का प्रतिशत क्रमश: 52.51 एवं 65.38 प्रतिशत है। अल्प विकसित क्षेत्रों में नारी शिक्षा का प्रतिशत और भी कम (लगभग 15-20 प्रतिशत) है। धार्मिक, सामाजिक, अशिक्षा तथा पुरुषों की क्रूरता जैसे कारणों के चलते महिलाएँ इस कुचक्र से मुक्त नहीं हो पाती हैं। स्वतंत्र चिंतन एवं भयमुक्त वातावरण मिलने पर भारत की नारी परिवार नियोजन की ओर अग्रसर होगी

एवं जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित कर सकती है। पुरुष के साथ नारी के शिक्षित होने पर ही शिक्षा का वास्तविक प्रसार होगा क्योंकि महिलाएँ अपने बच्चों तथा भविष्य की पीढ़ी को साक्षर बनाने में अधिक योगदान देंगी। फलत: परिवार में शिक्षा का प्रसार होगा।

(III) शिक्षा का प्रसार—

पारिवारिक जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए तथा छोटा परिवार-सुखी परिवार की सार्थकता को सिद्ध करने के लिए शिक्षा का स्थान सर्वोतम है। शिक्षित परिवार के लोग अपने परिवार के आकार को छोटा रूप देना अपना धर्म समझते हैं। शिक्षित परिवार जीवन के प्रति बुद्धि संगत दृष्टिकोण अपनाता है। वह निरोधक साधनों का प्रयोग करता है। वह कृषि एवं अन्य कार्यों से अलग रखकर बच्चों को पढ़ने के लिए विद्यालय पहुँचाना उचित समझता है।

(IV) नारी स्वास्थ्य

सामान्यत: नारियों को कुपोषण शिकार होना पड़ता है। अधिक बच्चे होने के कारण उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह पाता तथा उस अनुपात में उन्हें पौष्टिक आहार तथा संतुलित भोजन प्राप्त नहीं हो पाता। इस कारण उनका स्वास्थ्य एवं पारिवारिक स्वास्थ्य अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियाँ एवं अंधविश्वास को मिटाने पर ही नारी जागरण एवं जनसंख्या नियंत्रण संभव हो सकता है।

(V) उत्पादन में वृद्धि :-

अधिक उत्पादन करने से मनुष्य का जीवन स्तर ऊँचा होता है तथा भौतिक रूचि बढ़ जाती है। वे भविष्य की योजनाएँ बनाने में लग जाते हैं। कृषि कार्य करने के लिए गहरी जुताई करना, उन्नत बीज, कृषि में आधनिकतम साधनों का प्रयोग, कृषि क्षेत्र में विस्तार करने के लिए नयी भूमि एवं परती भूमि का उपयोग सिंचाई के साधनों का विकास औद्योगिकीकरण घरेलू तथा छोटे स्तर के उद्योगों को प्रोत्साहन आदि उल्लेखनीय प्रयासों से जीवन-स्तर ऊँचा उठ सकेगा। संतानोत्पति से अभिरूचि बदलकर निर्माण कार्यों में लग जाने पर जनसंख्या में वृद्धि अपेक्षाकृत कमी होने की संभावना है।

सामान्यत: औद्योगिक विकास देश विशेष की जनसंख्या को नियंत्रित करता है। औद्योगिक उत्पादन में अधिक समय तक व्यस्त रहने के कारण मनुष्य की मानसिकता में बदलाव आता है तथा वह प्रजनन की ओर कम ध्यान देता है जिसका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर पड़ता है अर्थात जनसंख्या धीमी गति से बढ़ती है।

(VI) सन्तति सुधार शास्त्र (Gugenics)

सामाजिक अर्थव्यस्था पारिवारिक सुख और राष्ट्रीय नियोजन के उद्देश्य से परिवार नियोजन तथा संतान की सीमा आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कुछ अवांछित व्यक्तियों या असाध्य रोगी (जैसे मिरगी, उन्माद, कैंसर, विकलांग, पागलपन, शरीर से अयोग्य, नैतिक पतन आदि) को विवाह जैसा पवित्र बंधन से दूर रखना चाहिए। जिसका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर पड़ता है। इसके संबंध में विद्यालय स्तर के पाठयक्रम में इसे सम्मिलित करके बालकों को शिक्षा देना अनिवार्य है।

(VII) सामाजिक सुरक्षा का विकास :-

सामान्यत: देश विशेष के विकसित भविष्य के लिए देश की आर्थिक क्रियाओं में लगे प्राय: सभी व्यक्तियों की सामाजिक सुरक्षा अति आवश्यक है। ''बच्चे दरिद्र लोगों की सम्पति है और एक प्रकार का बीमा भी।'' ऐसी प्रवृति को रोकना तथा सामाजिक सुरक्षा का होना अति आवश्यक है। इस संबंध में भूमिका पुन: वितरण, वृद्धावस्था पेंशन, विशेष दुर्घटना बीमा आदि का होना आवश्यक है।

(VIII) परिवार नियोजन :-

जनसंख्या की वृद्धि रोकने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम सर्वाधिक एवं अधिक व्यवहारिक उपाय है। चिकित्सा विज्ञान एवं तकनीकी विकास द्वारा मृत्यु दर में कमी आयी है। परन्तु यदि जन्म दर नहीं रोका गया तो जनसंख्या में वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक होगी। अत: मृत्यु दर कम करने के साथ-साथ जन्म दर भी कम करना होगा। इसके लिए सभी धर्मों के लोगों के लिए परिवार नियोजन बहुत ही आवश्यक हैं गर्भनिरोधक उपायों को यदि अपनाया जाय तो निश्चित ही जनसंख्या वृद्धि रोकी जा सकती है।

1.6 भारत में जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम (III Consequences of Growth of Population in India)

सामान्यत संसाधनों के अनुपात में अत्यधिक जनसंख्या में वृद्धि आर्थिक विकास के लिए रूकावट या अवरोध मानी जाती है। अविकसित देशों में आर्थिक प्रयास के कारण जो राष्ट्रीय उत्पादन तथा आय में वृद्धि होती है उसका अधिकतर हिस्सा जनसंख्या की वृद्धि से निष्फल हो जाता है। इससे उस देश के लोगों का जीवन-स्तर अथवा प्रति व्यक्ति आय बहुत ऊँची नहीं उठ पाती है। उदाहरण के लिए भारत की प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में कुल राष्ट्रीय आय में लगभग 53 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इससे स्पष्ट पता चलता है कि जनसंख्या में वृद्धि लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त इस वृद्धि से पूँजी निर्माण की दर बढ़ाने में रूकावट पैदा होती है। आर्थिक विकास की गति बढ़ाने के लिए पूँजी निर्माण की दर में यह वृद्धि आवश्यक है। परन्तु जनसंख्या की तीव्र बुद्धि से बचत करने की क्षमता घट जाती है। यदि भारत में आबादी तीव्र गति से नहीं बढ़ती तो हमलोग पूँजी निर्माण की दर यथेष्ट मात्रा में बढ़ाने में सफल होते।

उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि के कारण अन्य कई समस्याएँ उत्पन्न होती जाती हैं फलस्वरूप विकास की गति अवरूद्ध हो जाती है तथा विकास तीव्र गति से नहीं हो पाता है।

देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अधिक मात्रा में खाद्यान्नों की आवश्यकता पड़ती है। चूँकि भारत में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति कायम है फलत: बढ़ती खाद्यान्नों की माँग के कारण खाद्य समस्या उत्पन्न हो गयी है। भारत में हरित क्रांति के प्रभाव से खाद्यान्न संकट की कमी को पूरा करा लिया गया है परन्तु निर्यात के लिए शेष खाद्यान्नों का भंडार नहीं बढ़ पाता है, बल्कि कुछ मात्रा में खाद्यान्न आयात

भी करना पड़ता है। वर्तमान समय में उत्तरी भारत के सभी राज्यों में मानसून के अभाव में सूखे की स्थिति बनी हुई है। यदि अकाल पड़ जायेगा तो खाद्य संकट उत्पन्न हो जायेगा। अत: आदर्श जनसंख्या रहने पर खाद्य-संकट की स्थिति नहीं होती है। देश में बढ़ती बेरोजगारी का मूल कारण अधिक जनसंख्या है। परिणामस्वरूप देश में अपहरण, लूट-पात, चोरी, डकैती, दुर्घटनाएँ (रेल, मोटरगाड़ी, नौका, हवाई जहाज) आदि घटनाएँ आये दिन होती रहती है।

अत: निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि सुन्दर एवं खुशहाल भारत की कल्पना आदर्श जनसंख्या पर ही हो सकती है।

1.7 निष्कर्ष (Summing-up)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वर्तमान दशाब्दी में भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक हो गयी है। विगत पाँच दशाब्दियों से जनसंख्या में वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक हो रही है। जनसंख्या की वृद्धि में प्रादेशिक भिन्नता भी दृष्टिगोचर हो रही है। ऊपर वर्णित उपायों को यदि अपनाया गया तो जनसंख्या वृद्धि पर कुछ हद तक अंकुश लगाया जा सकता है।

1.8 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

(1) भारत में जनसंख्या की वृद्धि के उत्तरदायी कारणों की समीक्षा कीजिए।

Explain the factors responsible for the growth of Population in India.

(2) भारत में जनसंख्या की वृद्धि की अवस्थाओं की विवेचना कीजिए।

Discuss the stages of growth of Population in India.

1.1 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) भारत का भूगोल - डॉ० एस० सी० जैन

(2) भारत का वृहत भूगोल- डॉ० अलका गौतम

(3) भारत का भूगोल - डॉ० वीरेन्द्र सिंह चौहान।

❖❖❖

इकाई-5 **भारत में जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व** पाठ - 2

(Distribution and Density of Population in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)

2.1 परिचय (Introduction)

2.2 भारत में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करनेवाले कारक (Factors Effecting of Distribution and Density of Population)

2.3 भारत में जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप (Patterns of Distribution of Population in India)

2.4 भारत में जनसंख्या का घनत्व (Density of Population in India)

2.5 निष्कर्ष (Summing-up)

2.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

2.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय से हम जान पायेंगे कि भारत में जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व एकसमान नहीं है। यहाँ विश्व का लगभग 2.4 प्रतिशत भूमि में 16% प्रतिशत जनसंख्या पायी जाती है। इसका प्रादेशिक वितरण असमान होने के लिए कुछ कारण उत्तरदायी है। साथ ही घनत्व में विषमता का भी अध्ययन करेंगे।

2.1 परिचय (Introduction)

किसी देश में उत्पति के साधनों में जनसंख्या का महत्व अधिक होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि किसी देश के निवासी उसके सबसे महत्वपूर्ण संसाधन होते हैं, क्योंकि वे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं तथा देश के आर्थिक विकास के लिए प्रशिक्षित एवं दक्ष मानव शक्ति प्रदान करते हैं। वस्तुत: जनसंख्या ही किसी देश अथवा प्रदेश अथवा ाज्य का आधारभूत तत्व, कारक एवं संसाधन तीनों है। किसी देश की शक्ति उसके शिक्षित, स्वस्थ, परिश्रमी तथा कुशल निवासियों में ही निहित होती है। उस देश की जनसंख्या प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करती है तथा उन्हें भविष्य के लिए संरक्षित करती है।

इस सन्दर्भ में एस. एम. जैन का कथन है कि ''मानवीय संसाधन का विशिष्ट महत्व है।'' इसके बिना प्राकृतिक एवं अन्य उपलब्ध एवं विकसित संसाधनों के आगे के विकास एवं उनके बुद्धिमतापूर्ण उपयोग करना संभव नहीं हो सकता है।'' देश विशेष की जनसंख्या, उसकी शिक्षा, कार्य कुशलता, दूरदर्शिता व उत्पादकता का सीधा संबंध मानव संसाधन से है क्योंकि मानव संसाधन के द्वारा ही देश समाज, कला-कौशल एवं उस देश की उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है। प्राकृतिक संसाधन एवं मानव संसाधन दोनों देश-विशेष के लिए समान महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि वे एक गाड़ी के दो पहिए के समान होते हैं। जो देश मानव संसाधन को जितनी कुशलता से आर्थिक क्रियाकलापों के विकास में उपयोग कर लेता है वह देश उतना ही अधिक सम्पन्न हो जाता है।

जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व तथा वहाँ के लोगों के स्वभाव पर उस देश का आर्थिक विकास एवं व्यापारिक उन्नति निर्भर करती है। अत: जनसंख्या का क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन आवश्यक है।

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में 102.7 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। भारत विश्व का द्वितीय (चीन के बाद) वृहत्तम जनसंख्या वाला देश है। यह विशालतम जनसंख्या (विश्व की 16.7 प्रतिशत) विश्व के 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल पर निवास करती है जो स्थल एवं प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक दबाव की सूचक है। जनसंख्या के इस दबाव के कारण आर्थिक एवं सामाजिक पिछड़ेपन, निम्न जीवन स्तर, निर्धनता, कुपोषण, रोग आदि अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

प्रदेश विशेष देश विशेष में सामान्यत: जनसंख्या का वितरण अनेक प्राकृतिक, सामाजिक, जनांकिकीय राजनीतिक तथा ऐतिहासिक कारकों द्वारा नियंत्रित होता है। ये कारक सामूहिक रूप में कार्य करते हैं। इन प्राकृतिक कारकों के परिणामस्वरूप कुछ खास क्षेत्रों में जनसंख्या अपेक्षाकृत अधिक एवं कम पायी जाती है जहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर घनत्व अपेक्षाकृत बहुत अधिक है तथा शेष क्षेत्रों में सामान्य या इससे कम प्रतिवर्ग किलोमीटर निवास करते हैं। अत: भारत में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों का सर्वप्रथम अध्ययन करना उचित जान पड़ता है।

2.2 भारत में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करनेवाले कारक (Factors Affecting Distribution and Density of Population in India)

देश विशेष अथवा राज्यों या प्रदेश विशेष की जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों में समतल धरातल, जलवायु, उपयुक्त तापक्रम, पर्याप्त शुद्ध जल की प्राप्ति, प्राकृतिक वनस्पति कृषि योग्य भूमि, खनिज उद्योग, यातायात के साधन आदि उल्लेखनीय हैं जिन भागों में उपयुक्त वातावरण पाया जाता है वहाँ जनसंख्या का साव अधिक देखने को मिलता है।

भारतीय जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करनेवाले तत्वों का प्रभाव निम्न रूपों में पाया जाता है।

(1) स्वास्थ्यकर जलवायु :-

स्वास्थ्यकर जलवायु वाले प्रदेशों अथवा क्षेत्रों में जनसंख्या का बसाव अपेक्षाकृत अधिक देखने को मिलता है। अधिक एवं निम्न तापमान एवं अधिक वर्षा, जनसंख्या के विकास के लिए अनुपयुक्त है। इसके विपरीत अनुकूल जलवायु मानव बसाव के लिए उपयुक्त होता है। प्राय: हिमालय पर्वत की तराई प्रदेश, भावर प्रदेश गंगा नदी के निम्न डेल्टाई प्रदेशों में दलदलीय वनों की अधिकता है, साथ ही आर्द्र जलवायु के कारण विषैले कीड़े-मकोड़े जीव जन्तुओं तथा मलेरिया या इन्फ्लुएंजा जैसी बीमारी ग्रस्त क्षेत्रों में जनसंख्या का बसाव प्राय: कम पाया जात है जबकि गंगा के मैदान में अनुकूल जलवायु पायी जाती है। फलत: अधिक जनसंख्या पायी जाती है। जम्मू-कश्मीर, उत्तरांखण्ड जैसे निम्न तापमान वाले राज्यों में जनसंख्या वृद्धि संभव नहीं है।

भारत कृषि प्रधान देश है जहाँ कृषि के लए पर्याप्त मात्रा में वर्षा की आवश्यकता है। निम्न वर्षा वाले क्षेत्रों/राज्यों/प्रदेशों/विशेषकर राजस्थान आदि) में जनसंख्या का घनत्व बहुत ही निम्न है। उत्तरी राजस्थान, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, पंजाब, आदि राज्यों में सिंचाई के सहारे कृषि कार्य किया जाता है। अधि क वर्षा वाले राज्यों विशेषकर असम, मेघालय, आदि राज्यों में भी जनसंख्या का घनत्व अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।

(2) भरण-पोषण के साधन :-

भारत जैसे कृषि प्रधान राष्ट्र में लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। अत: यहाँ अधिकांश जनसंख्या मैदानी भाग में निवास करती है। मैदानी भाग में भरण-पोषण के साधन सुगमतापूर्वक प्राप्त हो जाता है। यहाँ सिंचाई हेतु पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध हो जाता है। यहाँ वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है। इन्हीं कारणों से उत्तरी भारत का मैदानी भाग मालावार प्रदेश पूर्वी समुद्रतटीय मैदान आदि प्रदेशों में जनसंख्या का घनत्व अधिक पाया जाता है।

प्रायद्वीपीय के पठारी भाग की भूमि पथरीली तथा वनाच्छादित है। सामान्यत: यहाँ वर्षा भी कम मात्रा में होती है। फलत: गहन कृषि संभव नहीं है। यही कारण है कि इस पठारी प्रदेश में जनसंख्या का घनत्व कम पाया जाता है। जिन भागों में खनिज पदार्थ (खनिज संसाधन) पाये जाते हैं तथा औद्योगिकीकरण का विकास अपेक्षाकृत अधिक हुआ है, वहाँ जनसंख्या सघन पायी जाती है। जमशेदपुर (टाटानगर) , बोकारो, आसनसोल, कुल्टी, वर्णपुर, हीरापुर, झरिया, धनबाद, राँची, हजारीबाग, कोडरमा, राउरकेला, भुवनेश्वर, हैदराबाद, विशाखापट्टनम, चेन्नई, मदुराई, बंगलौर, मैसूर, भोपाल, जबलपुर, नागपुर, मुम्बई, अहमदाबाद, सूरत, भरौंच, पुना (पुणे) आदि उल्लेखनीय नगरों एवं महानगरों में जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक पाया जाता है। इन औद्योगिक केन्द्रों में भरण-पोषण के साधन सुगमतापूव्रक उपलब्ध हो जाते हैं।

(3) आवागमन के साधनों की सुविधा :-

मानव को अपने दैनिक क्रियाकलाप या भरण-पोषण, चिकित्सा, शिक्षा आदि आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना जाना पड़ता है। अत: आवागमन के सुलभ साधनों का

विकास जिन भागों में अधिक हुआ है, वहाँ जनसंख्या का जमाव भी प्राय: अधिक हुआ है। पर्वतीय, पठारी, मरूस्थलीय, सघन जंगलों, दलदलीय आदि प्राकृतिक अवरोधक भागों में रेलमार्ग, सड़क मार्ग, आदि परिवहन के साधनों का निर्माण करना दुरूह, दुष्कर एवं कठिन कार्य है। इन भागों में कठिनाई के साथ-साथ अधिक आर्थिक व्यय होता है। इसके विपरीत मैदानी एवं समतल भागों में सड़क मार्ग एवं रेलमार्ग का जाल सा दिखाई पड़ता है। फलत: इन भागों में बसने वाले लोगों को आवागमन की सुविधा उपलब्ध है। अत: औद्योगिकीकरण का केन्द्रों, नगरों, महानगरों, बन्दरगाहों आदि केन्द्रों में जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

(4) सुरक्षा :-

जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व का संबध सुरक्षा से सीधा होता है। जीवन की सुरक्षा एवं धन-सम्पति की सुरक्षा जहाँ होती है लोग वहाँ बसना पसन्द करते हैं। प्राय: घने वन, जंगली पशुओं की बहुलता, चोर डाकुओं, लुटेरे, हत्या, अपहरण आदि असुरक्षात्मक भावनाओं से परिपूर्ण प्रदेशों में मनुष्य निवास करना पसन्द नहीं करता है। नित्य-प्रति इन मुसीबतों का सामना करते हैं। फलत: उनके हृदय में शूरता वीरता की भावनाएँ भरी रहती है। वे बहादुर प्रकृति के होते हैं। देश के जिन भागों में जान-माल की पूरी सुरक्षा होती है वहाँ मनुष्य रहना पसन्द करते हैं। भारत एवं पाकिस्तान की सीमा, काश्मीर, पूर्वांचल, नागालैण्ड आदि राज्यों एवं प्रदेशों के असुरक्षा के कारण कम घनत्व पाया जाता है।

(5) धरातल :-

जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभाव करनेवाले कारकों में धरातल का स्थान सर्वोपरि है। प्राय: समतल धरातल एवं मैदानी भागों में जीविकोपार्जन का साधन आसानीपूर्वक उपलब्ध हो जाता है बल्कि पर्वतीय एवं दुरूह भागों में भरण-पोषण करने में कठिनाई होती है। यही कारण है कि भारत के अलावे विश्व के अन्य देशों में भी जनसंख्या का जमघट मैदानी भागों में अधिक तथा उच्च पर्वतीय भागों में नगण्य अथवा अपेक्षाकृत बहुत कम पाया जाता है। यही कारण है कि सतलुज, गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, पूर्वी एवं पश्मी समुद्रतटीय मैदानों में जनसंख्या बहुत अधिक पायी जाती है।

(6) जल प्रवाह :-

जल प्रवाह का प्रभाव जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व पर देखने को मिलता है। वैसे भाग जहाँ जल निकास (जल प्रवाह) में कठिनाई है तथा जहाँ जल जमाव के कारण प्रदेश, विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों तथा वन होते हैं। ऐसे भागों में मच्छरों का प्रकोप होता है। फलत: मलेरिया रोगों से लोग ग्रसित हो जाते हैं। अत: यहाँ जनसंख्या का घनत्व विरल होता है।

मिट्टी संसाधन किसी भी देश में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को नियंत्रित करती है। क्योंकि मिट्टी संसाधन का सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ता है। जिस भाग में उर्वर मिट्टी पायी जाती है वहाँ जनसंख्या का बसाव अधिक देखने को मिलता है तथा ठीक इसके विपरीत अनुर्वर मिट्टी वाले क्षेत्रों में कृषि के अभाव में जनसंख्या के भरण-पोष्ज्ञण के साधनों की कमी होती है फलत: जनसंख्या कम पायी जाती

है। इसके विपरीत अति उर्वर मिट्टीयों से निर्मित होने के कारण भारत के मैदानी भाग में सघन जनसंख्या पायी जाती है।

(7) आर्थिक दशाएँ :-

आर्थिक औद्योगिक व्यापारिक केन्द्रों के चतुर्दिक जनसंख्या का जमघट पाया जाता है वहाँ सघन जनसंख्या का घनत्व पाया जाता है। बोकारो, टाटानगर, भिलाई, सूरत, अहमदाबाद आदि अनेक औद्योगिक नगरों में औद्योगिक एवं आर्थिक विकास के कारण महानगरों का विकास हुआ जहाँ जनसंख्या का सघन घनत्व एवं जमघट पाया जाता है।

(8) प्रावधिकी विकास :-

देश में उच्च तकनीकि विकास के कारण हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर की आधुनिकतम आविष्कार के परिणामस्वरूप मशीन निर्माण उद्योगों की स्थापना हो जाती है वहाँ जनसंख्या का घनत्व अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। बंगलूरु (बंगलोर) के अतिरिक्त अन्य आधुनिक यंत्रों के निर्माण उद्योगों में लगे नगरों में जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

(9) सामाजिक संगठन :-

सामान्यत: सुरक्षा की भावना तथा कृषि, पशुपालन एवं सहयोग के लिए पूर्वजों ने एक साथ रहना प्रारंभ किया, फलत: सघन बस्तियों का उद्‌भव एवं विकास हुआ।

(10) सरकारी नीतियाँ :-

देश में सरकारी संरक्षण एवं जनसंख्या के भरण-पोषण एवं सुरक्षा की नीति आदि बसने वाले लोगों के लिए लाभप्रद हुई तो वहाँ लोग अधिक संख्या में बसने लगते हैं। यदि सरकारी नीति नकारात्मक रही तो उस स्थान पर लोग बसना पसन्द नहीं करते ।

2.3 भारत में जनसंख्या की वितरण का प्रतिरूप (Patterns of Distribution of Population in India)

देश विदेश अथवा प्रदेश विशेष में जनसंख्या का वितरण अनेक प्राकृतिक, सामाजिक जनांकिकीय, राजनैतिक तथा ऐतिहासिक कारकों द्वारा नियंत्रित होता है। ये कारक सामूहिक रूप में कार्य करते हैं। भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है। भारत के कुछ राज्यों अथवा प्रदेशों में जनसंख्या का वितरण घनत्व अधिक है तो कुछ खस प्रदेशों में मध्यम तथा उससे कम है। इस असमान वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में मुख्य रूप से धरातलीय स्वरूप, जल प्रवाह मिट्टी, स्वास्थ्य कर जलवायु आदि उल्लेखनीय प्राकृतिक कारक हैं। क्लार्क (Clarke) एवं जेलिंस्की (Zelinsky) के अनुसार आर्थिक दशाएँ प्राविधिकी विकास, सामाजिक संगठन सरकारी नीतियाँ तथा सांस्कृतिक कारक भी उत्तरदायी है जिनका वर्णन इस अध्याय में किया जा चुका है। जनसंख्या का वितरण तथा घनत्व के दो पहलू है। इन दोनों में काफी घनिष्ठ

संबंध है। इन सभी प्रभावी कारकों के संबंध में समाजशास्त्री भूगोलवेत्ता तथा अन्य विद्वानों ने आबादी के वितरण को विभिन्न इकाइयों में रहनेवाले लोगों को प्रतिशत तथा उसके क्षेत्र में प्रतिशत की व्याख्या से किया है। भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या को एक सौ (100 प्रतिशत) मानकर सभी राज्यों में रहने वाले लोगों का हिस्सा निकाला जा सकता है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से उनका विश्लेषण किया जा सकता है। आबादी तथा क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से विभिन्न राज्यों की क्रमबद्धता निकाली जा सकती है जिसे तालिका संख्या 5.2.01 में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

भारत में जनसंख्या का विषम वितरण देखने को मिलता है। उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा आंध्रप्रदेश में सम्मिलित रूप से देश के 35 प्रतिशत क्षेत्रफल पाया जाता है तथा लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। ठीक इसके विपरीत उतरी एवं उत्तरी-पूर्वी राज्यों में भारत का 15 प्रतिशत क्षेत्रफल पाया जाता है तथा जनसंख्या लगभग 4 प्रतिशत पायी जाती है। इससे विदित होता है कि भारत में जनसंख्या का वितरण असंतुलित है :-

(I) भारत के गंगा-यमुना-ब्रह्मपुत्र के मैदानी भाग में जनसंख्या अधिक देखने को मिलता है। इन राज्यों में मुख्य रूप से उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में घनीभूत ग्रामीण बस्तियाँ पायी जाती हैं। ये बस्तियाँ सापेक्षिक रूप में आकार में बड़ी होती हैं। इनकी दूसरी विशेषता है कि ये समीप या पास-पास स्थित होती है। इन राज्यों में अति उर्वर दोमट मिट्टी पायी जाती है। नदियों से दूर बांगड़ एवं नदियों के समीप खादर मिट्टियाँ पायी जाती हैं जिनमें खाद्यान्न दलहन, तेलहन एवं व्यवसायिक फसलें उत्पन्न की जाती हैं।

(II) अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण समुद्र के तटवर्ती राज्यों में विशेषकर केरल, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि राज्यों में देखने को मिलता है। पूर्वी समुद्र तटीय क्षेत्रों में विशेषकर गहन कृषि की जाती है। केरल की जलवायु गहन कृषि एवं बगाती कृषि के लिए विशेष अनुकूल है। यहाँ जीविकोपार्जन के लिए सुगम साधन उपलब्ध हैं महाराष्ट्र एक औद्योगिक राज्य है, जहाँ उत्तरप्रदेश एवं बिहार के पलायित कार्यकारी जनसंख्या वहाँ के मूल निवासियों से कम नहीं है। इस कारण इन प्रदेशों में जनसंख्या का जमघट पाया जाता है।

(III) दक्षिण के पठारी भागों में खनिज संसाधनों की बहुलता है तथा उस पर आधारित उद्योग स्थापित किए गए हैं। इस पठारी प्रदेश के खनन तथा औद्योगिक क्षेत्रों में जनसंख्या का बसाव अधिक है। शेष क्षेत्रों में जनसंख्या समान रूप से वितरित है। इनमें झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा आदि उल्लेखनीय राज्य हैं।

(IV) सर्वाधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण केन्द्र शासित राज्यों में देखने को मिलता है। इनमें चंडीगढ़, दादरा एवं नगर हवेली, दमन एवं दीव, दिल्ली, लक्षद्वीप, पांडिचेरी आदि उल्लेखनीय राज्य हैं। इन राज्यों में मुख्यत: नगरीय जनसंख्या पायी जाती है। व्यापारिक केन्द्र आकृष्ट जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

तालिका सं. 5.2.3

भारत की जनगणना 2001 : जनसंख्या का वितरण, प्रतिशत दशकीय वृद्धि दर, लिंगानुपात, घनत्व एवं साक्षरता दर लिंगानुपात जनसंख्या घनत्व

क्र.	राज्य केन्द्रशासित क्षेत्र	जनसंख्या 2001			कुल जनसंख्या का %	प्रतिशत दशकीय वृद्धि दर		लिंगानुपात (प्रति 100 पुरुषों पर महिलाएँ		जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति प्रति वर्ग किमी)		साक्षरता दर 2001		
		व्यक्ति	पुरुष	महिलाएँ		1981-91	1991-01	1991	2001	1991	2001	व्यक्ति	पुरुष	महिलाएँ
	भारत	1,027,015,247	531277078	495,738,169	100.00	23.86	21.34	927	933	267	324	65.24	75.85	54.16
1.	जम्मू कश्मीर	10,069,917	5,300,574	4,769,343	0.98	20.34	29.04	896	900	77	99	54.46	65.75	41.82
2.	हिमाचल प्रदेश	6.077,248	3,085,256	2,991,992	0.59	20.79	17.53	976	970	93	109	77.13	86.02	68.08
3.	पंजाब	24,289,296	12,963,362	11,325,934	2.37	20.81	19.76	882	874	403	482	69.95	75.63	63.55
4.	चंडीगढ़	900,914	508,224	392,690	0.09	42.16	40.33	790	773	5,632	7,903	81.76	85.65	76.65
5.	उतरांचल	8 479,562	4,316,401	4,163,161	0.83	24.23	19.20	936	964	133	477	68.59	79.25	56.31
6.	हरियाणा	21,082,989	11,327,658	9,755,331	2.05	27.41	28.06	865	861	372	477	68.59	79.25	56.31
7.	दिल्ली	13,782,976	7,570,890	6,212,086	1.34	51.45	46.31	827	821	6,352	9,294	81.82	87.37	75.00
8.	राजस्थान	56,473,122	29,381,657	27,091,465	5.50	28.44	28.33	910	922	129	165	61.03	76.46	44.34
9.	उतरप्रदेश	166,052,859	87,466,301	78,586,558	16.17	25.55	25.80	876	898	548	689	57.36	70.23	42.98
10.	बिहार	82,878,796	43,153,964	39,724,832	8.07	23.38	28.43	907	921	685	880	47.53	60.32	33.57
11.	सिक्किम	540,493	288,277	252,276	0.05	28.47	32.98	878	875	57	76	69.68	76.73	61.46
12.	अरूणाचल प्रदेश	1,091,117	573,951	517,166	0.11	36.83	26.21	859	901	10	13	54.74	64.07	44.24
13.	नागालैंड	1,988,636	1,041,686	946,950	0.19	56.08	64.41	886	909	73	120	67.11	71.77	61.92
14.	मणिपुर	2,388,634	1,207,338	1,181,296	0.32	29.29	30.02	958	978	82	107	68.87	77.87	59.70
15.	मिजोरम	891,058	459,783	431,275	0.09	39.70	29.18	921	938	33	42	88.49	90.69	86.13
16.	त्रिपुरा	3,191,168	1,636,138	1,555,030	0.31	34.30	15.74	945	950	263	304	73.66	81.47	65.41
17.	मेघालय	2,306,069	1,167,840	1,138,229	0.22	32.86	29.94	955	975	79	103	63.31	66.14	60.41
18.	असम	26,638,407	13,787,799	12,850,608	2.59	24.24	18.85	923	932	286	340	64.28	71.93	56.03
19.	पश्चिम बंगाल	80,221,171	41,487,694	38,733,477	7.81	24.73	17.84	917	934	767	904	69.22	77.58	60.22
20.	झारखंड	26,909,428	13,861,277	13,048,151	2.62	24.03	23.19	922	941	274	338	5413	67.94	39.38
21.	उड़ीसा	36,706,920	18,612,340	18,094,580	3.57	20.06	15.94	971	972	203	236	63.61	75.95	50.97
22.	छतीसगढ़	20,795,956	10,452,426	10,343,530	2.03	25.73	18.06	985	990	130	154	65.18	77.86	52.40
23.	मध्यप्रदेश	60,385,118	31,456,873	28,928,245	5.88	27.24	24.34	912	920	158	196	64.11	76.80	50.28
24.	गुजरात	50,596,992	26,344,053	24,252,939	4.93	21.19	22 48	934	921	211	258	69.97	80.50	58.60
25.	दमन एवं दीव	158,059	92,478	65,581	0.02	28.62	55.59	969	709	907	1,411	81.09	88.40	70.37
26.	दादरा एवं नागर हवेली	220,451	121,731	98,720	0.02	33.57	59.20	952	811	282	449	60.03	73.32	42.99
27.	महाराष्ट्र	96,752,247	50,334,270	46,417,977	9.42	25.73	22.57	934	922	257	314	77.27	86.27	67.51
28.	आंध्रप्रदेश	75,727,541	38,286,811	37,440,730	7.37	24.20	13.86	972	978	242	275	61.11	70.85	51.17
29.	कर्नाटक	52,733,958	26,856,343	25,877,615	5.14	21.12	17.25	960	964	235	275	67.04	76.29	57.45
30.	गोवा	1,343,998	685,617	658,381	0.13	16.08	14.89	967	960	316	363	82.32	88.88	75.51
31.	लक्षद्वीप	60,595	31,118	29,477	0.01	28.47	17.19	943	947	1.616	1,894	87.52	93.15	81.56
32.	केरल	31,838,619	15,468,664	16,369,955	3.10	14.32	9.42	1.036	1,058	749	819	90.92	94.20	87.86
33.	तमिलनाडु	62,110,839	31,268,654	30,842,185	6.05	15.39	11.19	974	986	429	478	73.47	82.33	64.55
34.	पांडिचेरी	973,829	486,705	487,124	0.09	33.64	20.56	979	1.00	11,683	2,029	81.49	88.89	74.13
35.	अंडमान निकोबार द्वीप समूह	356,265	192,985	163,280	0.03	46.70	26.94	818	846	34	43	81.18	86.07	75.29

(V) पर्वतीय राज्यों एवं राजस्थान के मरूस्थलीय प्रदेश में जनसंख्या कम पायी जाती है। ये प्रदेश विषम परिस्थितियों से घिरे हुए हैं। इसी कारण इन राज्यों में जनसंख्या कम पायी जाती है।

2.4 भारत में जनसंख्या का घनत्व (Density of Population in India)

देश, राज्य अथवा प्रदेश विशेष में प्राप्त कुल संसाधनों पर उसकी जनसंख्या के अन्तर्गत किया जाता है। यह आंकलन प्राय: जनसंख्या के आकार तथा क्षेत्रफल के संदर्भ में देखा जाता है। सामान्यत: जनसंख्या के घनत्व का अभिप्राय किसी इकाई क्षेत्र (वर्ग किलोमीटर अथवा वर्गमील) में पायी जाने वाली कुल जनसंख्या से है।

सामान्यत: जनसंख्या का घनत्व चार प्रकार से ज्ञात किया जाता है :-

(I) गणितीय घनत्व, (II) कार्यिक घनत्व,

(III) कृषीय घनत्व, (IV) आर्थिक घनत्व

सामान्यत: गणितीय घनत्व किसी इकाई क्षेत्र में निवास करनेवाली जनसंख्या के अनुपात को कहा जाता है। कार्यिक घनत्व क्षेत्र अथवा प्रदेश की कुल जनसंख्या तथा कृषिगत भूमि का अनुपात है। सामान्यत: कृषि संसाधनों पर जनसंख्या के दबाव को कृषीय घनत्व कहा जाता है तथा आर्थिक घनत्व किसी क्षेत्र की जनसंख्या के लिए आवश्यक संसाधनों तथा क्षेत्र-विशेष के उत्पादन पर निर्भर करता है। आर्थिक घनत्व मात्र औद्योगिक अर्थव्यवस्था के लिए सार्थक है, परन्तु अधिक व्यावहारिक गणितीय घनत्व को माना जाता है।

भारत में जनसंख्या के घनत्व में राज्य तथा प्रदेश के अनुसार अन्तर देखने को मिलता है। यदि भूतकाल की जनसंख्या के घनत्व (अगले पृष्ठ पर देखें)

तालिका सं. 5.2.2

भारत में जनसंख्या का घनत्व

जनगणना वर्ष	घनत्व (प्रति वर्ग कि० मी०)	जनगणना वर्ष	घनत्व प्रति वर्ग कि० मी०
1901	77	1961	142
1911	82	1971	177
1921	81	1981	216
1931	90	1991	267
1941	103	2001	324
1951	117		

तालिका सं. 5.2.3

भारत में जनसंख्या का घनत्व (व्यक्ति/वर्ग कि०मी०)

क्रम.	राज्य/केन्द्र शासित राज्य	घनत्व 2001	क्रम.	राज्य/केन्द्र शासित राज्य	घनत्व 2001
1.	आंध्रप्रदेश	275	19.	नागालैंड	120
2.	अरूणाचल प्रदेश	13	20.	उड़ीसा	236
3.	असम	140	21.	पंजाब	482
4.	बिहार	180	22.	राजस्थान	165
5.	छत्तीसगढ़	154	23.	सिक्किम	76
6.	गोवा	363	24.	तमिलनाडु	478
7.	गुजरात	258	25.	त्रिपुरा	304
8.	हरियाणा	477	26.	उत्तरप्रदेश	689
9.	हिमाचल प्रदेश	109	27.	उतरांचल	159
10.	जम्मू एवं कश्मीर	99	28.	पश्चिम बंगाल	904
11.	झारखंड	338		**केन्द्रशासित प्रदेश**	
12.	कर्नाटक	275	1.	अण्डामन निकोबार	43
13.	केरल	819	2.	चंडीगढ़	7903
14.	मध्यप्रदेश	196	3.	दादरा एवं नगर हवेली	4.49
15.	महाराष्ट्र	314	4.	दमन एवं दीव	1411
16.	मणीपुर	107	5.	दिल्ली	9294
17.	मेघालय	103	6.	लक्षद्वीप	1894
18.	मिजोरम	42	7.	पांडिचेरी	2029
				भारत	324

स्रोत : Census of India 2001

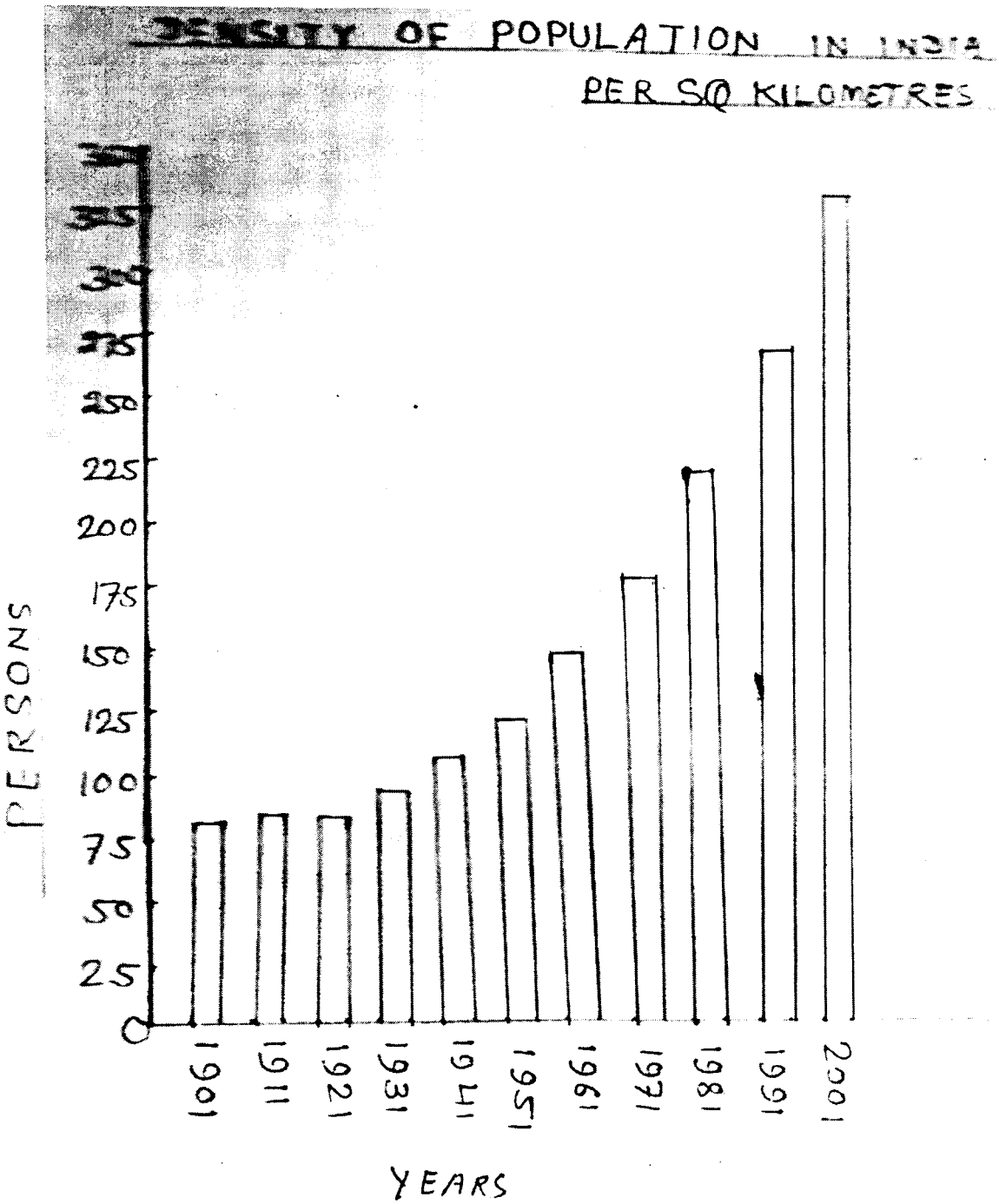
DENSITY OF POPULATION IN INDIA
PER SQ KILOMETRES
PERSONS
0
25
50
75
100
125
150
175
200
225
250
275
325
1901
1911
1921
1931
1941
1951
1961
1971
1981
1991
2001
YEARS

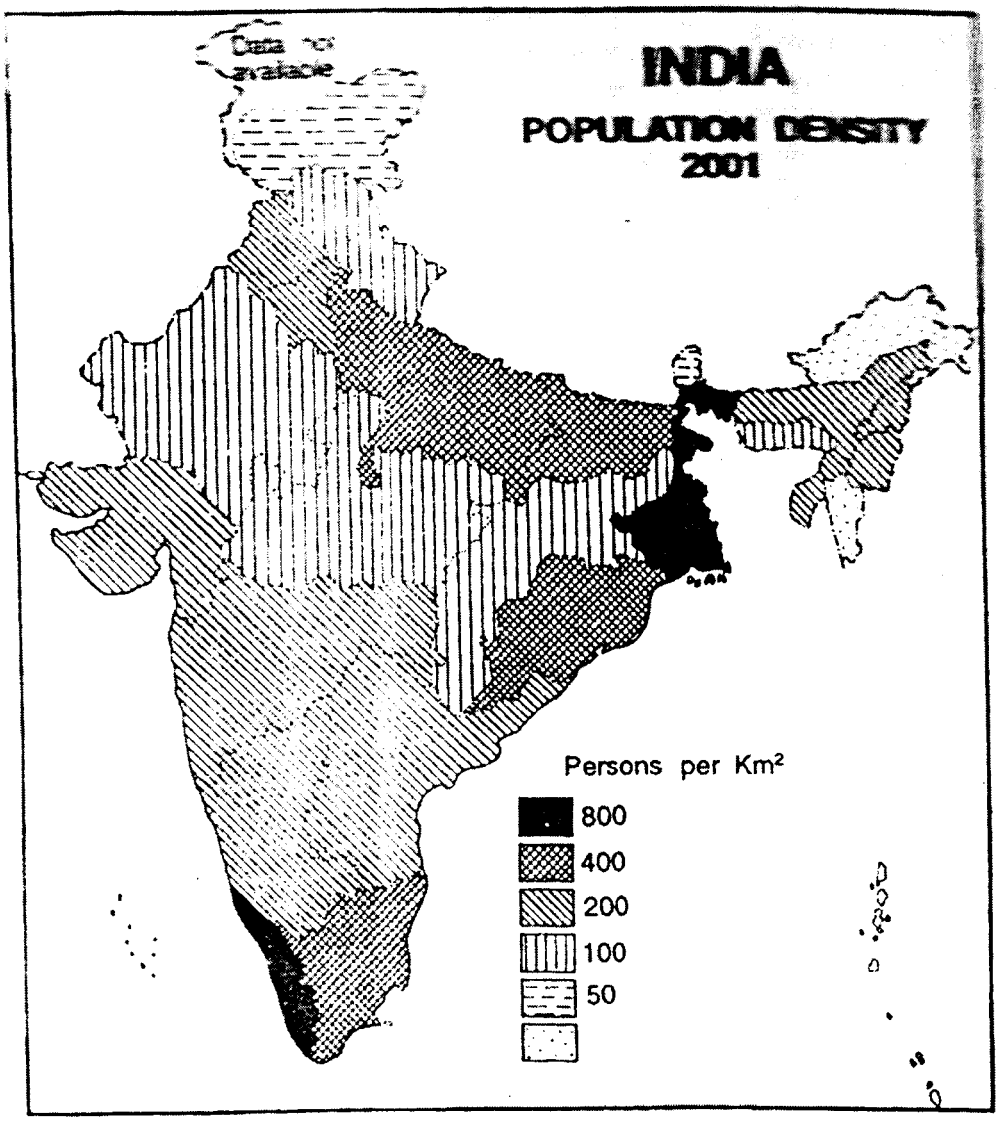

चित्र : भारत में राज्यवार जनसंख्या का घनत्व

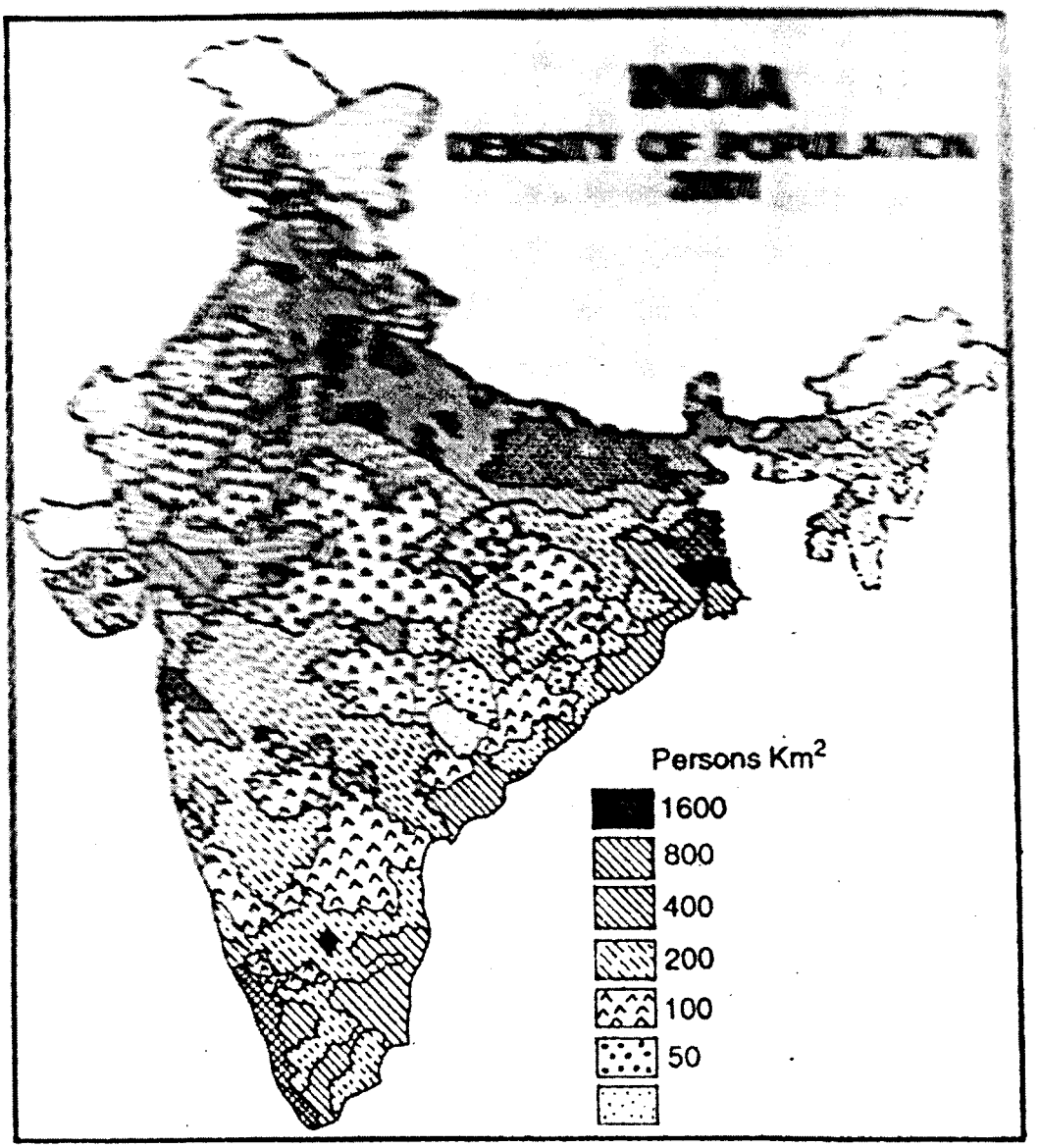

चित्र : जिलावार जनसंख्या का घनत्व

का आकलन किया जाय तो यह प्रतीत होता है कि लगभग 100 वर्ष पूर्व भारत में जनसंख्या का घनत्व बहुत ही कम था। जनसंख्या में वृद्धि के साथ-साथ घनत्व में भी वृद्धि देखने को मिलती है जिसे मानचित्र संख्या 5.2.1 तथा तालिका संख्या 5.2.01 एवं 5.2.3 आरेख सं. 5.2.1 में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

1951 की जनगणना के अनुसार भारत में औसत जनसंख्या का घत्नव 267 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर था जो बढ़कर 2001 में 324 हो गया जिसे तालिका संख्या 5.2.2 एवं 5.2.3 में तथा आरेख सं. 5.2.1 तथा मानचित्र सं. 5.0.2.1 एवं 2 में दर्शाया गया है।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन के पश्चात् यह विदित होता है कि भारत में जनसंख्या का घनत्व सर्वत्र एक समान न होकर अत्यन्त ही विषम है। जनसंख्या का घनत्व कुछ राज्यों में सर्वाधिक है तो कुछ राज्यों में बहुत ही कम है। अत: जनसंख्या के घनत्व के विचार से भारत को निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :-

(1) सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले प्रदेश :-इस प्रदेश के अन्तर्गत उन राज्यों को सम्मिलित किया गया है जहाँ जनसंख्या का घनत्व 1000 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक है। इस वर्ग के अन्तर्गत दिल्ली (9,294), चंडीगढ़ (7.903), पांडिचेरी (2029), लक्षद्वीप (1,894), दमन एवं दीव (1,411) आदि उल्लेखनीय है। 1991 की जनगणना के आधार पर प्राय: इन सभी राज्यों में जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि हुई है। 1991 ई० में इन राज्यों में जनसंख्या का घनत्व क्रमश: 6,352, 5,632, 1,683, 1,616 एवं 907 था। उपर्युक्त सभी राज्यों में जीविकोपार्जन के लिए औद्योगिकीकरण तथा शेष राज्यों में उन्नतिशील कृषि उत्तरदायी है। इस वर्ग के अन्तर्गत वैसे राज्यों में 2001 की जनगणना के अनुसार 1000 व्यक्ति से अधिक घनत्व प्रति वर्ग कि०मी० पाया जाता है। इनमें दिल्ली महानगर, चंडीगढ़, पांडिचेरी, लक्षद्वीप, दमन दीव आदि उल्लेखनीय नगरों एवं महानगरों की जनसंख्या भी शामिल है। इन केन्द्र शासित राज्यों में नगरीय जनसंख्या पायी जाती है जिस कारण घनत्व अधिक पाया जाता है। औद्योगिक विकास होने के कारण गंगा के मैदानी भाग से अधिक संख्या में श्रमिकों का आगमन इन राज्यों में हो जाता है। इसका प्रभाव जनसंख्या के घनत्व पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त यहाँ की जलवायु जनसंख्या वृद्धि के लिए अनुकूल है।

(2) अधिक जनसंख्या घनत्व वाले प्रदेश :- इस वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित होने वाले राज्यों में पश्चिम बंगाल, बिहार, केरल, उत्तरप्रदेश आदि उल्लेखनीय राज्य है। यहाँ 1991 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या का घनत्व क्रमश: 767, 685, 749 और 548 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि० मी० था। इस वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित होनेवाले राज्यों में 2001 की जनगणना के अनुसार 1000 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम जनसंख्या का घनत्व पाया जाता है। इसके अन्तर्गत पश्चिम बंगाल में (904), बिहार (880), केरल (819), एवं उत्तरप्रदेश (689) में व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर निवास करते हैं।

प्राय: ये सभी राज्य गहन कृषि क्षेत्र हैं। कृषि यहाँ की मुख्य पेशा है। यहाँ उर्वर मिट्टी पायी जाती है तथा यहाँ की जलवायु कृषि तथा जनसंख्या वृद्धि के लिए अनुकूल है। इन राज्यों में सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं। यहाँ वर्ष में दो या तीन फसलें (विशेषकर, सिंचित क्षेत्रों में) उगायी जाती है। यहाँ के किसानों का जीवन स्तर सामान्य है। यहाँ जीविकोपार्जन के साधन सुलभ तरीके से प्राप्त हो जाता है। कलकत्ता हावड़ा महानगर, सियालदह आसनसोल, वर्द्धमान, रानीगंज, पटना, मुजफ्फरपुर, गया, दरभंगा, भागलपुर, छपरा, लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी, कानपुर, अलीगढ़ आदि दल्लेखनीय महानगरों एवं नगरों में जनसंख्या का घनत्व अधिक है। इस घनत्व में नगरीय घनत्व भी शामिल है।

इन महानगरों में वृहद तथा लघु उद्योग धंधों का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है जहाँ अधिक संख्या में विभिन्न क्षेत्रों से कार्यकारी पलायित श्रमिकों का आगमन हो जाता है। ये श्रमिक इन औद्योगिक प्रतिष्ठानों में कार्य करते हैं। साथ ही ये महानगर प्रशासनिक शैक्षणिक चिकित्सा सांस्कृतिक आदि के केन्द्र भी हैं।

(3) मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले प्रदेश :- इस प्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित होने वाले राज्यों में प्रदेशों को मुख्य रूप से 2001 की जनगणना के अनुसार 300-500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर निवास करते हैं। इनमें पंजाब (482), तमिलनाडु (478), हरियाणा (477), दादर एवं नगर हवेली (449), गोवा (363), असम (340), झारखण्ड (338), महाराष्ट्र (314), एवं त्रिपुरा में (304), प्रतिव्यक्ति कि०मी० निवास करते हैं। इन राज्यों में 1991 की जनगणना के आधार पर जनसंख्या का घनत्व क्रमश: 403, 429, 372, 282, 316, 286, 274, 257 एवं 263 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर निवास करते हैं।

प्राय: इन सभी राज्यों के जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि देखने को मिलती है। इनमें से कुछ राज्यों की मुख्य पेशा कृषि है अर्थात ये कृषि प्रधान राज्य हैं। इनमें से कुछ राज्य उद्योग प्रधान राज्य हैं। इस घनत्व के अन्तर्गत इस प्रदेश में पाये जाने वाले नगरों की जनसंख्या भी शामिल है। इनमें अमृतसर, चेन्नई महानगर, मदुराई, वास्को-द-गामा, कोडरमा, धनबाद, वृहद मुम्बई, पुणे, नागपुर आदि उल्लेखनीय नगर एवं महानगरों की जनसंख्या का घनत्व सम्मिलित है।

प्राय: ये सभी नगर एवं महानगर वृहत एवं लघु उद्योग प्रधान केन्द्र हैं। इन औद्योगिक केन्द्रों के समीप जनसंख्या का घनत्व अधिक देखने को मिलता है।

प्राय: असम को छोड़कर इन राज्यों का विस्तार दक्षिण के प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश पर है। हालाँकि पठारी प्रदेश में ग्रामीण बस्तियो बिखरी हुई तथा दूर-दूर पर निवास करती हैं। खनन क्षेत्रों एवं औद्योगिक केन्द्रों के समीप नगरीय बस्तियाँ पायी जाती है। इन कारणों (क्षेत्रफल अपेक्षाकृत अधिक होने एवं पठारी-पहाड़ी धरातल होने के कारण) से इन राज्यों में जनसंख्या का मध्यम घनत्व पाया जाता है।

(4) कम जनसंख्या वाले घनत्व — इस प्रदेश के अन्तर्गत 2001 की जनगणना के अनुसार 100 से 300 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर निवास करते हैं। इस प्रदेश में मुख्यत: गुजरात (258), आंध्रप्रदेश (275), कर्नाटक (275), उड़ीसा (236), मध्यप्रदेश (196), राजस्थान (165), उत्तरांचल (159), छत्तीसगढ़ 154), नागालैंड (120), हिमाचल प्रदेश (109), मणिपुर (107), मेघालय (103), आदि उल्लेखनीय राज्यों को सम्मिलित किया जाता है। इन राज्यों में 1991 की जनगणना के अनुसार क्रमश: 211, 242, 235, 203, 159, 189, 133, 130, 73, 93, 82 एवं 99 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर निवास करते हैं।

उपर्युक्त सभी पर्वतीय भागों में स्थित राज्यों एवं राजस्थान मरूस्थलीय प्रदेश में स्थित है। यहाँ दुर्गम जंगल तथा मरूभूमि पाये जाने के कारण जीविकोपार्जन के साधन सीमित हैं। फलत: जनसंख्या का घनत्व प्राय: कम पाया जाता है।

5. निम्न जनसंख्या वाले प्रदेश :- इस प्रदेश के अन्तर्गत 2001 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या का घनत्व 100 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर से कम पाया जाता है। इनमें जम्मू-कश्मीर (99), सिक्किम (76), अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह (43), मिजोरम (42), अरूणाचल प्रदेश आदि उल्लेखनीय राज्यों को सम्मिलित किया जा सकता है।

उपर्युक्त प्राय: सभी राज्यों का विस्तार पर्वतीय अंचल अर्थात पर्वत प्रांत में है। ये दुर्गम जंगलों से आच्छादित तथा विषम परिस्थितियों से परिपूर्ण है। सघन जंगलों के विस्तार के कारण कृषि भूमि का एकमात्र अभाव है। दूसरी बात यह है कि कृषि करने योग्य अनुकूल जलवायु का भी अभाव है। इस कारण जनसंख्या का घनत्व प्राय: निम्न पाया जाता है।

2.5 निष्कर्ष (Summing up)

इस अध्याय में अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि देश में जनसंख्या का वितरण समान नहीं है। भारत की धरातलीय धरोहर समान नहीं है। शायद इसका प्रत्यक्ष प्रभाव जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व पर पड़ा है। जिसका विशद वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

2.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

(1) भारत में जनसंख्या के घनत्व की असमानता के कारणों पर प्रकाश डालिए तथा जनसंख्या घनत्व के प्रतिरूपों का विवरण दीजिए।

Throw light on the factors for unequal density of population in India and give an account of the patterns of population density.

(2) भारत में जनसंख्या के वितरण तथा घनत्व के असमानता के कारणों की विवेचना कीजिए।

Discuss the factors of unequal distribution and density of population in India.

2.7 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) भारत का भूगोल - मामोरिया डॉ० चतुर्भुज एवं डॉ० एस० सी० जैन

(2) भारत का वृहत भूगोल- डॉ० अलका गौतम

(3) इण्टर भूगोल भाग-2 - डॉ० सुरेश प्रसाद

भारत का सामान्य भूगोल (दूर शिक्षा निदेशालय) - डा० आर० पी० सिंह।

❖❖❖

भारत में नगरीकरण
(Urbanization in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

3.0 उद्देश्य (Objective)
3.1 परिचय (Introduction)
3.2 नगर की संकल्पना (Concept of City)
3.3 नगरीयकरण का अर्थ (Meaning of Urbanization)
3.4 भारत में नगरी केन्द्रों का क्रमिक विकास (Systematic Development of Urban Centres in India)
3.5 भारत में नगरों की वृद्धि (Growth of Cities in India)
3.6 भारत में नगरीकरण की उपनतियाँ (Trends of Urbanization in India)
3.7 भारत में नगरों के आकार के अनुसार नगरी जनसंख्या की वृद्धि (Growth of Urban Population According to City Size in India)
3.8 भारत में नगरीयकरण से उत्पन्न समस्याएँ एवं उनका समाधान (Problems Associated with Urbanization and their Solution in India
3.9 निष्कर्ष (Summing-up)
3.10 मॉडल प्रश्न (Model Questions)
2.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

3.0 उद्देश्य (Objective)

भारत में नगरीकरण अध्याय के अन्तर्गत हम जान पायेंगे कि नगरीकरण किसे कहते हैं तथा नगरों की विविध संकल्पनाएँ क्या है?

भारत में नगरीकरण का विकास धीमी गति से क्यों हुआ तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नगरीकरण में वृद्धि के कौन-कौन से कारण उत्तरदायी हैं।

भारतीय नगरों का आकार एवं उनकी वृद्धि दर की प्रवृति किस प्रकार प्रभावित होती है।

पुनः हम भारत के विभिन्न राज्यों में विकसित नगरों की विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे। अंत में भारतीय नगरों में उत्पन्न समस्याओं तथा उनके समाधान इस अध्याय का मुख्य केन्द्र है।

3.1 परिचय (Introduction)

सामान्यतः बस्तियाँ मानव समुदाय के मकानों अथवा इमारतों का वह समूह है, जिसका उपयोग निवास करने, कार्यालय, गोदाम, उद्योग, व्यापार तथा विविध कार्यों के लिए किया जाता है। यह मानव द्वारा निर्मित सांस्कृतिक पहलुओं का प्रतिफल है। भारत सहित विश्व के जनगणना विभाग ने जनसंख्या की विशेषताओं के आधार पर दो वर्गों मे विभक्त किया है-ग्रामीण तथा नगरीय। ये दोनों प्रकार की बस्तियाँ अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन की दृष्टि से स्पष्टतः भिन्न होती है। देश विदेश में नगरीकरण का स्तर वहाँ के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का दर्पण होता है। भारत में ग्रामीण तथा नगरीय अधिवासों में अन्तर स्पष्ट करने के लिए विभिन्न आधार माने गये हैं। ग्रामीण तथा नगरीय संकल्पनाएँ वास्तविक की अपेक्षा मानसिक रूप में अधिक क्रियाशील हैं। ये लघु जनसमूह से वृहत् जनसमूह को इंगित करती हैं। अतः स्पष्ट करना कठिन है कि ग्राम्यता (ग्राम) की परिधि यहाँ समाप्त होती है तथा नगरीयता कहाँ से प्रारंभ होती है। साथ ही सभी नगरीय केन्द्र एक समान नहीं होते हैं। उनके कार्यों तथा जन समह संबंधी अनेक विषमताएँ पगरों में देखने को मिलती हैं।

3.2 नगर की संकल्पना (Concept of City)

भारत में ग्रामीण बस्तियों का विकसित रूप वर्त्तमान समय में नगर के रूप में देखने को मिलता है। अतः नगर विशेष का आकार, उसकी महानता, सांख्यिकी अथवा उसकी कुल जनसंख्या पर निर्भर करता है। इस आधार पर इसे क्रमशः गाँव, अनुमार्ग बस्ती, नगरीय गाँव, कस्बा, शहर, नगर, महानगर आदि 8 वर्गों में विभाजित किया गया है। भारत में जनसंख्या तथा सकी विशेषताओं के आधार पर नगरों को कई वर्गों में विभाजित किया गया है:-

(1) (क) ग्राम (Village) :— सामान्यतः ग्राम शब्द का प्रयोग आदिकाल से होता आया है। स्थायी रूप में एक साथ निवास करने का उल्लेख ऋग्वेद में भी हुआ है। ग्राम शब्द की उत्पति ग्रिहा अर्थात गिरोह अथवा झुण्ड के उपरान्त ही हुआ। मुख्यतः गोत्र के अनुसार 'ग्राम' शब्द की रचना प्रारम्भ हुई। महाभारत में भी 'ग्राम' शब्द का प्रयोग इसी प्रकार किया गया। ग्रामीण बस्तियों की जनसंख्या प्रायः 3000 - 5000 भी आंकी गई है। प्रायः लघु ग्रामों की जनसंख्या 3000 से कम होती है।

(ख) अनुमार्ग बस्ती (Road side Settlement) – प्रायः ऐसी नगरीय बस्तियाँ सड़कों के किनारे या चौराहे पर मुख्य आकर्षक केन्द्र डीजल एवं पेट्रोल पंप अथवा टंकी के समीप भोजन एवं नाश्ता के लिए होटल उपलब्ध होने के कारण विकसित होने लगते हैं। ऐसी अनुमार्ग बस्तियाँ अधिक संख्या में अवलोकित होती हैं।

(2) नगरीय गाँव (Urban Village) –

(क) प्राय: ऐसी नगरीय बस्तियों में 3000 से अधिक किन्तु 5000 से कम जनसंख्या पायी जाती है। ऐसी बस्तियों को ग्रामीण नगर बस्तियाँ कहते हैं।

(ख) कस्बा – इस कोटि की दूसरे प्रकार की नगरीय बस्तियों में कृषि कार्य से इतर कार्य किए जाते हैं ये नगरीय गाँव, शिक्षण संस्थान, लघु औद्योगिक संस्थान, खनिज संसाधन के निष्कासन द्वारा विकसित होते हैं जहाँ कालान्तर में जनसंख्या बढ़कर 5000 से 19,999 तक पहुँच जाती है।

शहर (Town) :- प्राय: कस्बों की आबादी 20,000 से अधिक होती है। विकास के क्रम में अनुमण्डल एवं जिला मुख्यालय आदि औद्योगिक संस्थान खनिज संसाधन केन्द्र, वाणिज्यिक केन्द्र, विस्तृत अथवा वाणिज्यिक केन्द्र, विस्तृत अथव स्थापक बाजार आदि पाये जाते हैं। विकास के क्रम में वहाँ की जनसंख्या क्रमश: 50,000 से 99,999 तक पहुँच जाती है। यहाँ नगर पालिका मनोरंजन केन्द्र आदि पाये जाते हैं। साथ ही शहरों में पुरुष कार्यशील जनसंख्या का कम से कम 75% भाग अकृषित कार्यों में संलग्न है तथा जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि० मी० से कम न हो। शहर की परिभाषा देते हुए A.E. Smalles ने कहा है कि "Where ever a large scale activity is geographically concentrated so as to give a localised basis for mass employment, town is atleast the semblance of a town is created." शहर की परिभाषा देते हुए von Richtofen ने कहा है कि "A town consists of an organised group in which normally the main occupations are concerned, with commrnce and industry as opposed to agricultural persuits."

नगर City :— सामान्यत: नगर शब्द से आशय ऐसे घनी जनसंख्या या अहालिकाओं का समूह जहाँ एक विस्तृत भूमि पर व्यापारिक प्रशासनिक औद्योगिक जनसंख्या गैर कृषि कार्य में लगी हुई है। सामान्यत: विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर होने वाले शहर को नगर की संज्ञा दी जाती है जिसकी जनसंख्या 1,00,000 से अधिक होती है। नगरों में विशेषकर द्वितीयक, तृतीयक, चतुर्थक व्यवसाय अपनाया जाता है। **वॉन रिचथोफेन** के अनुसार – ''नगर के अन्तर्गत एक ऐसा सुव्यवस्थित वर्ग निहित है जहाँ का मुख्य व्यवसाय वाणिज्य और उद्योग से संबंधित होता है और ये व्यवसाय कृषि कार्यों से सर्वदा भिन्न होते हैं। नगर की परिभाषा देते हुए **प्रो० वाइडल डिला-ब्लाश** ने लिखा है ''नगर सामाजिक संगठन वाला व्यापक क्षेत्र होता है तथा यह सभ्यता की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है।''

"A city is a social organisation of much greater scope, it is the expression of a stage of civilizatin which in certain localities have not achieved and which they may perhaps never of themselves attain."

आल्फ्रेड वेगनर ने नगर को मानव की व्यापार क्रियाओं का केन्द्रबिन्दु माना है। **प्रो० विलियम ओल्सन** ने नगर को विशेष प्रकार के कार्यों में एक बड़ा जनसमूह माना है तथा यहाँ पर विविध प्रकार

के कार्यों किए जाते हैं। **पिथरी जार्ज** ने नगरों को कृषि क्षेत्रों के मध्य स्थित व्यापारिक औद्योगिक, प्रशासनिक आदि कार्यों से जुड़े हुए केन्द्र माना है।

भारत के जनगणना विभाग ने स्थानों के आकार जनसंख्या का घनत्व, व्यवसायों तथा स्थानीय प्रशासनिक कार्यों के आधार पर ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में निम्नलिखित विभेद प्रस्तुत किये हैं:-

(i) 5000 से अधिक जनसंख्या हो।

(ii) जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि० मी० से अधिक हो।

(iii) कम से कम 75% पुरूष जनसंख्या गैर कृषि कार्यों में संलग्न हो।

(iv) वहाँ कोई स्थानीय प्रशासन जैसे निगम, नगरपालिका या कैन्टोनमेंड बोर्ड या नोटिफायड क्षेत्र हो।

(5) महानगर (मेट्रोपौलिस) (Metropolis)

सामान्यत: नगरों के विशाल आकार वाले नगरीय क्षेत्रों को महानगर की संज्ञा दी जाती है, जहाँ जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो एवं प्रादेशिक राजधानी या मुख्यालय हो, इसे मिलियन सिटी भी कहा जाता है। पटना, लखनऊ, बंगलौर, भोपाल, राँची, अहमदाबाद, हैदराबाद महानगर के उदाहरण हैं। महानगर का प्रमुख कार्य व्यापारिक वस्तुओं को एकत्रित करना एवं वितरित करना है। इन सब कार्यों की विशेषता पर उस प्रदेश की विशेषता का प्रभाव अवश्य है। प्रो. N.B. Gras के अनुसार "Metropolitan economy is the organisation of producers and consumers mutually dependent for goods and services where in their wants are supplied by a system of exchage concentrated in a large city which is the focus of local trade and the centre, through which normal economic relations with the out side are established and maintained." — N. B. Gras

6. सन्नगर (कोनर्वेशन) (Conurbation) :

यह एक बड़ा नगरीय क्षेत्र होता है जिसमें एक बड़ा नगर तथा अनेक छोटे-छोटे नगर मिल जाते हैं, अर्थात सन्नगर में कई फैलते हुए शहर या नगर परस्पर मिलकर एक इकाई बन जाते हैं। उदाहरण के लिए कोलकाता, मेट्रोपोलिटन क्षेत्र में 85 छोटे तथा बड़े नगर मिलकर एक कोनर्वेशन का निर्माण करते हैं। मुम्बई भारत का दूसरा कोनर्वेशन का उदाहरण है।

(7) मेगालोपोलिस (Megalopolis) :

मेगालोपोलिस अत्यन्त बड़े नगर होते हैं जिनकी जनसंख्या 50 लाख से अधिक होती है। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता इसका उदाहरण है। कोलकाता मुख्य व्यापारिक औद्योगिक, व्यवसायिक, प्रशासनिक तथा वाणिज्यिक केन्द्र हैं। यह भारत का सर्वाधिक धनी बन्दरगाह है।

3.3 नगरीकरण का अर्थ (Meaning of Urbanization)

नगर मानव सभ्यता के विकास के साथ ही साथ इसके आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं तकनीकी विकास का सच्चा सूचक होता है। सामान्यत: ग्रामीण क्षेत्रों का नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तन होने की प्रक्रिया को नगरीकरण कहा जाता है। दूसरे शब्दों में ग्रामीण से नगर में रूपान्तरण की प्रक्रिया के रूप को नगरीकरण कहा जाता है। नगर मानव सभ्यता के विकास के साथ ही साथ उसके आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं तकनीकी विकास का सच्चा सूचक होता है। नगरीय बस्तियों में निर्माण उद्योग, परिवहन, व्यापार आदि सेवाएँ तथा अन्य सेवाएँ की जाती हैं। नगरीय बस्तिया प्रधानत: गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न लोगों का आश्रय और कार्य स्थली होती है। नगरीय क्षेत्र में भू-स्वामी अपनी भूमि पर मकान बनाकर उसका विविध उपयोग करता है। इसके अतिरिक्त नगरीय क्षेत्रों में उच्चतम जीवन स्तर पाया जाता है। साथ ही नगरीय जीवन संशलिष्ट और परावलम्बी (Complex and Dependent) होता है। नगरवासियों को अपनी आवश्यकताओं के लिए तथा पेय जल, सफाई आदि सुविधाओं के लिए नगरपालिका पर निर्भर रहना पड़ता है। नगरीय बस्ती में परिष्कृत संस्कृति और भौतिकवादी दृष्टि की प्रधानता है एवं नगरीयता को जटिल बनाने में नगर की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाएँ उत्तरदायी होती हैं। **रीस मैन** Riss man (1964) ने नगरीकरण की व्याख्या परिवर्तन एवं इसके परिणामों के रूप में की है। जब एक समाज कृषि परक अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था को अपनाता है तथा एक छोटे समरूप समाज से एक विशाल विविधतापूर्ण समाज में परिणत होता है।'' **कार्टर** Carter 1979 के अनुसार '' नगरीकरण की प्रक्रिया से संकेन्द्रण के बिन्दुओं का गुणन हो जाता है तथा व्यष्टिगत सकेन्द्रणों का आकार बढ़ जाता है। जिसके दूरगामी परिणाम तथा स्थानिक अन्तक्रियाएँ होती हैं। टिसडेल Tisdale (1942) ने ''जनसंख्या संकेन्द्रण की बढ़ती हुई मात्रा को नगरीयकरण प्रक्रिया का सबसे प्रमुख पहलू माना है।'' **ट्रिवार्थ** Trewartha (1969) के अनुसार ''नगरीयकरण एक चक्रीय प्रक्रिया है जिससे गुजरकर एक राष्ट्र कृषिपरक से औद्योगिक समस्याओं में विकसित होता है। जी. टी. ट्रिवार्था के अनुसार ''कुल जनसंख्या में नगरीय स्थानों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात को नगरीकरण का स्तर कहलाता है।''

"The level of urbanization is defined as the proportion of total population residing in Urban Places."

नगरीकरण प्रक्रिया का तात्पर्य कुल जनसंख्या में उस वृद्धि से है जो कि नगरीय है।

"The Urbanization Process denotes an increase in the fraction of a population which is Urban."

सामान्यत: नगरीय भागों में यह वृद्धि एक ही दर से नहीं होती है।''

नगरीकरण की दर से हमारा तात्पर्य होता है कि विभिन्न समय में कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात में कितनी वृद्धि हुई है।

"The rate of urbanization is the percent increase over a given period in the proporation of tortal population living in urban communities."

ई० ई० बर्गेल के अनुसार ''ग्रामों के नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होने की प्रक्रिया को नगरीयकरण कहते हैं।

"The conversion of villages into urban areas is known as the processes of urbanization —E. E. Bergel.

ग्रिफिथ टेलर के अनुसार ''गाँवों से नगरों को जनसंख्या का स्थानान्तरण ही नगरीयकरण कहलाता है।

"Urbanization is a shift of people from village to city. — G. Taylor

बी. एन. घोष के अनुसार ''नगरीयकरण वह प्रक्रिया है जिसमें गाँव कस्बों में और कस्बे नगरों में परिवर्तित होते जाते हैं।

"Urbanization is the process by which villages turn into towns and towns deveop into cities."

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि नगरीकरण स्थिर नहीं होती वरन् गत्यात्मक होती है। इनकी गति मूलत: अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है। यह अर्थव्यवस्था जितनी तीव्रता से कृषि अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ती है उतनी ही तेजी से नगरीकरण भी बढ़ता है। अत: नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के मध्य सकारात्मक संबंध का बोध होता है। नगरों में जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ उनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि होती हैं। कुल जनसंख्या में नगरी जनसंख्या का अनुपात भी बढ़ता रहता है। भारत जैसे विकासशील देशों में नगरीकरण बहुत बाद में प्रारम्भ हुआ परन्तु तीव्र गति से हुआ। भारत में बड़े नगर तथा मेट्रोपोलिटन क्षेत्रों की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है जबकि छोटे नगर (कस्बे) स्थिर है। परिणामस्वरूप भारत में नगरीकरण के निम्न स्तर पर अति नगरीकरण ने अपनी निजी समस्याएँ उत्पन्न कर दी है।

3.4 भारत में नगरी केन्द्रों का क्रमिक विकास (Systematic Development of Urban Centres in India)

सामान्यत: औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण में गहरा संबंध है। इसका उदाहरण विश्व के विभिन्न देशों में भी देखने को मिलता है। यूरोप में 18वीं शताब्दी में औद्योगीकिकरण का सूत्रपात हुआ इसके साथ ही नगरीकरण भी होता गया। सिन्धु घाटी की सभ्यता एवं मोहनजोदड़ों के नगरीय केन्द्र भारत में प्रागैतिहासिक काल के नगरीकरण के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। प्राचीन काल में नगरों की उत्पति एवं विकास नदियों के किनारे संगमों तथा मैदानी भाग में हुआ। वैदिक काल में भी आर्यों ने नदियों के किनारे अनेक नगरों के अभ्युदय में सराहनीय योगदान दिया। उदाहरणस्वरूप सरयु नदी के तट पर अयोध्या; गंगा नदी के

तट पर का भी वाराणसी, पटना, विन्ध्याचल, कानपुर, गंगा एवं यमुना के संगम पर प्रयाग (इलाहाबाद) आदि उल्लेखनीय नगरों का विकास हुआ। महाभारत क्षेत्र के उत्तरार्द्ध में कुरूक्षेत्र राजनैतिक एवं सामयिक क्षेत्र के रूप में विख्यात था। तदनन्तर इसके समीपवर्ती भाग में पानीपत, सोनीपत, कैनाल, जीद थानेश्वर, करनाल आदि उल्लेखनीय नगरों की स्थापना की गयी।

धार्मिक नगरों के रूप में दक्षिणी भारत के मदुराई, रामेश्वरम्, काँचीपुरम, पुरी, कोणार्क आदि नगरों की स्थापना हुई। 500 ई० पूर्व से 650 ई० की अवधि में तक्षशिला, नालन्दा, साँची, भरहुत, राजगीर, कौशाम्बी आदि नगरों की स्थापना हुई। इस प्रकार नगरों का क्रमशः विकास होता गया। परन्तु राजपूत राजाओं के परस्पर युद्ध के कारण असुरक्षा की भावना के कारण पूर्व में स्थापित नगरों के विकास में अवरोध उत्पन्न हुआ तथा नगरों के विकास में बाधा आयी।

भारत में नगरों का पुनरुत्थान मुगल काल में हुआ। अकबर एवं शेरशाह ने यात्रियों की सुविधा के लिए सड़कें तथा ठहरने के लिए आश्रयों का निर्माण कराया सुरक्षा के लिए चहारदीवारी के अंन्तर्गत व्यापारिक नगरों का निर्माण किया तथा क्रमशः उसका विकास किया। इस काल में हैदराबाद, सिकन्दराबाद, लखनऊ, आगरा, लुधियाना आदि उल्लेखनीय नगरों का विकास हुआ। शाहजहाँबाद एवं अहमदाबाद का विकास चाहरदीवारी के अन्तर्गत हुआ। जयपुर एवं जोधपुर नगरों की स्थापना एवं विकास राजूपत राजाओं द्वारा किया गया। दिल्ली इसका ज्वलंत उदाहरण है जिसका उत्थान एवं पतन ऐतिहासिक काल में कई बार हुआ। बम्बई (मुम्बई) सूरत, मद्रास, (चेन्नई) कलकत्ता (कोलकाता), कालीकट, पांडिचेरी, माहि, कोचि, गोआ, दमन दीव आदि उल्लेखनीय पत्तन नगर व्यापार के विकास के परिणामस्वरूप स्थापित हुए।

ब्रिटिश शासन काल में नगरों के विकास पर ध्यान दिया गया। 1854 ई० में रेलमार्ग एवं सड़क मार्ग के विकास के साथ-साथ नगरों का क्रमशः विकास हुआ। परिवहन के मार्गों को पत्तनों एवं व्यापारिक नगरों से जोड़ा गया। फलतः प्रमुख परिवहन मार्गों पर अनेक नगर विकसित हो गए जिनमें मुगलसराय, दानापुर, किऊल, लोंडा, नागपुर, गोरखपुर, छपरा, गया आदि उल्लेखनीय हैं। भारत में औद्योगीकरण के विकास के साथ-साथ औद्योगिक नगरों का अभ्युदय हो जिनमें जमशेदपुर, भद्रावती, वर्णपुर, हीरापुर कुल्टी, सूरत भड़ौच, अहमदाबाद, शोलापुर आदि उल्लेखनीय हैं। देश में शैक्षणिक संस्थानों के रूप में अलीगढ़, रूड़की आदि नगरों का विकास हुआ। ब्रिटिश शासकों द्वारा राँची, शिमला आदि नगरों का विकास हुआ ग्रीष्मकालीन राजधानियों के रूप में किया गया। दार्जिलिंग, उटकमंड, नैनीताल, मसूरी, पंचमढ़ी, महाबालेश्वर आदि उल्लेखनीय नगरों का विकास स्वास्थ्यवर्द्धक स्थानों के रूप में हुआ। इस प्रकार इन उत्तरदायी कारकों के परिणामस्वरूप उपर वर्णित नगरों का विकास हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में औद्योगिकीकरण सिंचाई के साधनों जल विद्युत परियोजनाएँ आदि कारकों के परिणामस्वरूप नगरों का विकास हुआ। लोहा-इस्पात केन्द्रों के रूप में भिलाई, राऊरकेला, दुर्गापुर, बोकारो आदि नगरों की स्थापना की गई तथा क्रमशः उनका विकास हो गया। इसी प्रकार सिन्दरी,

मूरी, चितरंजन आदि नगरों में उद्योगों के स्थापना के बाद विकास हुआ। बरौनी एवं अंकलेश्वर नगरों का विकास तेलशोधन, शासन, उद्योगों की स्थापना के पश्चात संभव हो सका। सिंचाई तथा जल-विद्युत परियोजनाओं के पश्चात् डिहरी ऑन सोन, पंचेत, मैथन, नंगल, सम्बलपुर आदि नगरों का विकास हुआ।

भारत के कुछ नियोजित नगरों की स्थापना प्रशासनिक केन्द्रों के रूप में की गयी जिनमें चंडीगढ़, भुवनेश्वर, गाँधी नगर, दिसपुर आदि हैं। इसी प्रकार बड़े नगरों के समीपवर्ती क्षेत्रों में अनेक छोटे नगर विकसित होकर बड़े नगर बन जाते हैं। दिल्ली के निकट गाजियाबाद, नोयडा, रोहतक, गुड़गाँव, फरीदाबाद आदि उल्लेखनीय नगर इसके उदाहरण हैं।

3.5 भारत में नगरों की वृद्धि (Growth of Cities in India)

भारत में नगरों के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के दृष्टिगोचर के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि नगरों में जनसंख्या की वृद्धि क्रमिक रूप में होती रही। देश में व्याप्त अकाल एवं महामारियों के कारण इस अवधि में जनसंख्या में वृद्धि नहीं हुई परन्तु चिकित्सा सुविधाओं के समुचित विकास के कारण जनसंख्या में वृद्धि हुई। साथ ही नगरों के आकार में वृद्धि हुई। तालिका संख्या 01 तथा आर ब सं. 01 में भारत में नगरों के वृद्धि को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका सं. 01

भारत में आकार के अनुसार नगरों की वृद्धि (1901-2001)

जनगणना वर्ष /आकार	I	II	III	IV	V	VI	योग
1901	24	42	135	393	750	490	1834
1911	23	39	142	364	731	495	1776
1921	28	45	153	370	741	583	1920
1931	33	54	193	439	806	524	2049
1941	47	77	246	505	931	404	2210
1951	74	95	330	621	1146	578	2844
1961	102	129	449	732	739	179	2330
1971	145	178	570	847	641	150	2541
1981	216	270	739	1048	742	230	3245
1991	300	345	944	1170	740	198	3697
2001	393	401	1151	1344	888	191	4368

स्रोत : भारत की जनगणना 1981, 1991 & 2001

GROWTH OF CITIES IN INDIA

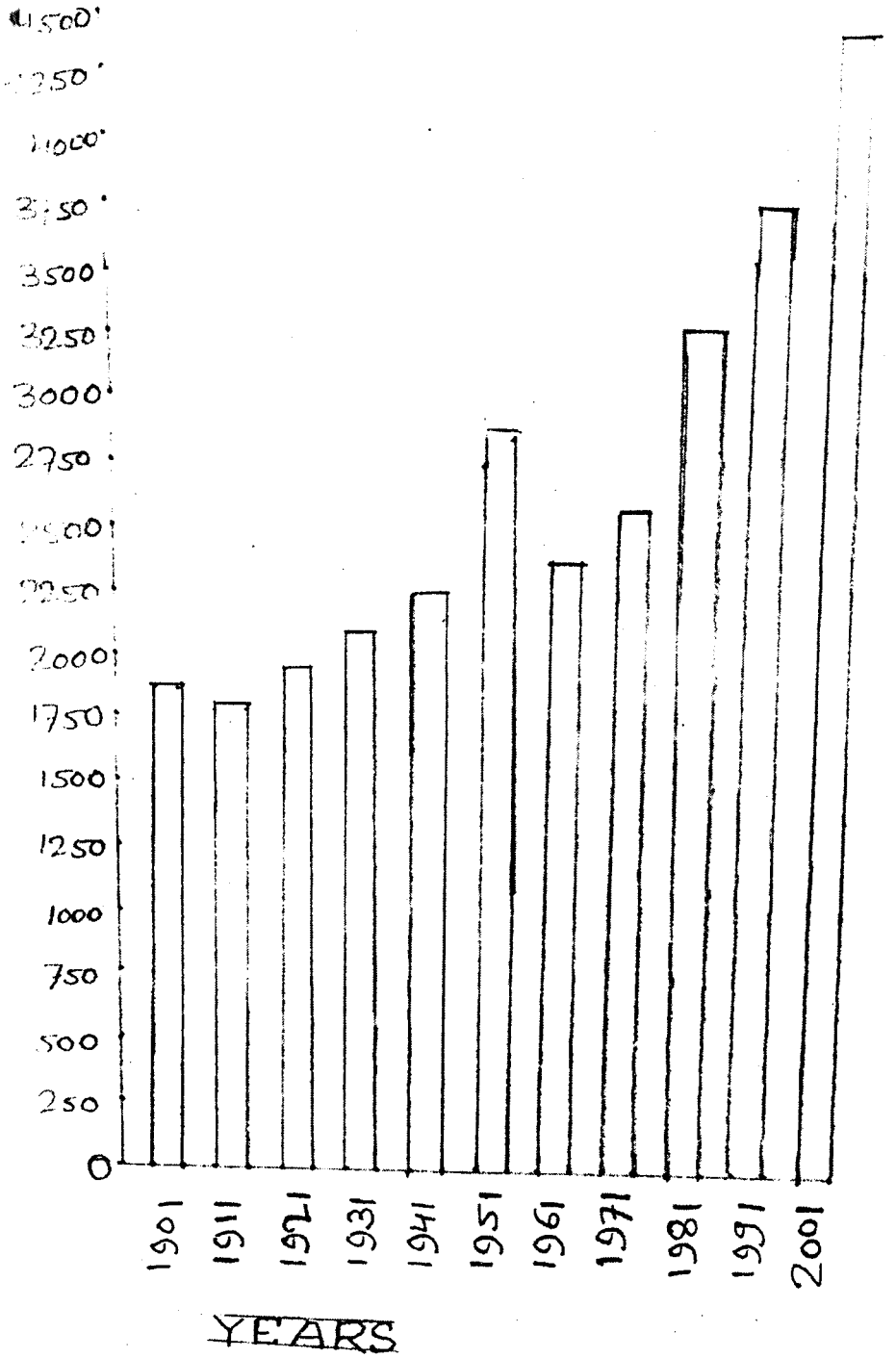

तालिका सं. 01 के अवलोकन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में उत्पन्न महामारियों

तथा अकाल के कारण 1901-1911 के मध्य दशाब्दी में करोड़ों व्यक्ति काल कवत्रित हो गए। फलत: वर्ग I तथा II, IV एवं V आकार वाले नगरों एवं शहरों की संख्या घटकर क्रमश 23, 39, 364 एवं 731 हो गयी। 1921 एवं उसके बाद नगरों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1951-61 के मध्य नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। इसका मूल कारण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय केन्द्रों में (नगरों में) रोजगार पाने के उद्देश्य से ग्रामीण जनसंख्या का पलायन है। इसके बाद प्रति दशाब्दी जनसंख्या (नगरीय जनसंख्या) में वृद्धि होती रही तथा नगरों का आकार बढ़ता गया।

भारत के प्राय: सभी राज्यों में समान रूप से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि नहीं हुई। इस अवधि में उत्तरप्रदेश में प्रथम श्रेणी के नगरों में सर्वाधिक वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान पर क्रमश: महाराष्ट्र, तमिलनाडु वं मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ़) रहे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि वर्ग के शहरों की संख्या में अधिक वृद्धि हुई। इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले नगरों की वृद्धि मुख्य रूप से उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोआ, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ़) गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि उल्लेखनीय हैं। खासकर उत्तरी-पूर्वी राज्यों में तृतीय श्रेणी की नगरों की कमी है।

जनसंख्या की वृद्धि के कारण पाँचवीं वर्ग के अधिकांश शहरों को प्रोन्नति प्राप्त हुई एवं अन्य वर्गों में सम्मिलित हो गए। फलत: इस वर्ग के शहरों की संख्या में अपेक्षाकृत कुछ कमी आ गयी। पंजाब, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश में पाँचवीं श्रेणी के नगरों की संख्या 1971-1981 के मध्य बढ़ी हैं। छठी श्रेणी के नगरों की संख्या, उनके आकार में वृद्धि के कारण घटी है। परन्तु उत्तरप्रदेश में ऐसे नगरों की संख्या में वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त विवरण के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में नगरों की संख्या में लगभग 42% की वृद्धि हुई है। इसे प्रभावित करनेवाले कारकों में उद्योगीकरण आर्थिक विकास रोजगार की प्राप्ति हेतु ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर पलायन अथवा प्रवास आदि उल्लेखनीय है।

3.6 भारत में नगरीकरण की उपनीतियाँ (Trends of Urbanization in India)

भारत में नगरीकरण की वृद्धि, प्रवृति एवं उपनतियाँ क्रमिक रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। 20वीं सदी के प्रारंभ में प्राकृतिक कारकों के कारण नगरीय जनसंख्या में वृद्धि नहीं हो सकी परन्तु चिकित्सा सुविधाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई जिसका प्रभाव नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या पर पड़ा। फलत: नगरों के आकार एवं नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई। इसे निम्नलिखित तालिका संख्या 02 तथा आरेख संख्या 02 के द्वारा चित्रित किया गया है।

तालिका सं. 2

भारत में नगरीयकरण की उपनतियाँ

वर्ष		नगरीय जनसंख्या (मिलियन में)	दशकीय वृद्धि (%)	नगरीयकरण (%)
मंदगति	1901	25.85	-	11.0
से वृद्धि	1911	25.95	0.35	10.04
	1921	28.09	8.27	11.3
	1931	33.46	19.12	12.2
	1941	44.15	31.97	14.1
मध्यम गति से वृद्धि	1951	62.44	41.42	17.6
	1961	78.93	26.41	18.3
	1971	109.09	38.22	20.2
तीव्र गति से वृद्धि	1981	156.19	46.02	23.7
	1991	217.61	49.32	25.7
	2001	285.35	31.13	27.8

स्रोत : भारत की जनगणना 1991-2001

TRENDS OF URBANIZATION IN INDIA

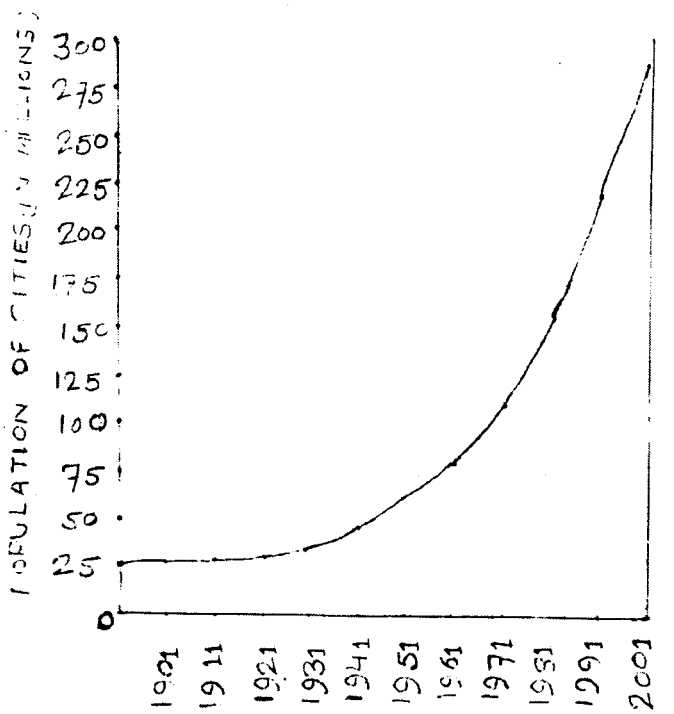

तालिका संख्या 2 के अवलोकन के पश्चात् भारत में नगरीकरण की निम्न अवस्थाएँ दृष्टिगोचर होती हैं:-

(1) मंद गति से नगरीयकरण :- भारत में 20वीं सदी के प्रारम्भ (1901-1931) में नगरीयकरण मंद गति से हुई। इस अवधि में भारत में औद्योगीकरण का विकास नगण्य था। साथ ही भारत में कृषि की प्रधानता के कारण नगरों में निवास करने की प्रवृति कम थी। लोग कृषि को प्राथमिकता देते थे तथा व्यवसाय एवं नौकरी के प्रति अभिरूचि कम थी। दूसरी ओर अकाल, महामारी (हैजा, प्लेग, मलेरिया, टाइफाइड आदि) तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण लाखों लोग काल-कलवित हो गये। फलत: ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में वृद्धि नहीं हो सकी तथा मंद गति से नगरीयकरण में वृद्धि हुई।

(2) मध्यम गति से नगरीयकरण :- इस अवधि में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के पश्चात् जनसंख्या में वृद्धि सामान्य स्तर से हुई। चिकित्सा सुविधाओं में सुधार के कारण महामारियों पर अंकुश (रोकथाम) लगाया गया। फलत: जनसंख्या में वृद्धि हुई। औद्योगीकरण के प्रोत्साहन के कारण नगरीकरण की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ। औद्योगिक, प्रशासनिक एवं व्यापारिक नगरों में लोग अधिक संख्या में आकर बसने लगे। फलत: नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई तथा नगरीयकरण में वृद्धि हुई।

(3) तीव्र गति से नगरीकरण :- भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सिचाई के साधनों, औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना हुई। लोगों रोजगार पाने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर अधिक सख्या के पलायन किया। फलत: एक विस्फोट के रूप में नगरीकरण की प्रवृति विकसित हुई। लोग नगरों की ओर अग्रसर होने लगे। फलत: नगरीय जनसंख्या में अपार वृद्धि हुई।

3.7 भारत में नगरों के आकार के अनुसार नगरीय जनसंख्या की वृद्धि (Growth of Urban Population According to Town Size in India)

भारतीय जनगणना विभाग ने नगरीय जनसंख्या के आधार पर भारतीय नगरों को निम्न उपविभागों में विभक्त किया है। इसमें जनसंख्या, उसकी प्रशासनिक एवं अन्य सांस्कृतिक विशेषताएँ आदि उल्लेखनीय हैं तालिका संख्या 03 में नगरों के आकार के अनुसार नगरीय जनसंख्या को प्रदर्शित किया गया है :-

तालिका संख्या-03

भारत में नगरों के आकार के अनुसार नगरीय जनसंख्या में वृद्धि (प्रतिशत में)

वर्ग	नगर का आकार/जनसंख्या	1961	1971	1981	1991	2001
I.	1 लाख से अधिक	51.42	57.24	60.42	65.20	68%
II.	50,000 - 99,999	11.23	10.92	11.63	10.95	9.7
III.	20,000 - 49,999	16.34	16.01	14.33	13.49	12.2
IV.	10,000 - 19,999	12.77	10.94	9.94	7.77	6%
V.	5000 - 9,999	6.87	4.25	3.58	2.60	2.4
VI.	5,000 से कम	6.87	4.45	3.58	2.60	0.2

स्रोत : भारत की जनगणना 1991-2001

तालिका संख्या 3 के अवलोकन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि सर्वाधिक जनसंख्या की वृद्धि वर्ग 1 के अन्तर्गत आने वाले नगरों (1 लाख से अधिक जनसंख्या वाले) में हुई है। इन नगरों में वर्ष 1961 से 2001 तक जनसंख्या की वृद्धि निरन्तर हो रही है। 2001 की जनगणना के अनुसार वर्ग I, II, एवं III नगरों में कुल 90% नगरीय जनसंख्या निवास करती है। इन नगरों में अधिक जनसंख्या वृद्धि का मूल कारण ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार के लिए नगरों में नवयुवकों का पलायन है।

वर्ग IV, V एवं VI में जनसंख्या की वृद्धि अपेक्षाकृत बहुत ही कम देखने को मिलती है। इन नगरों में क्रमशः 2001 में 6.9%, 2.4% एवं 0.2% नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई।

भारत में दस लाखी नगरों की संख्या में वृद्धि मुख्य रूप से 20वीं शताब्दी के मध्य तथा उत्तरार्द्ध में हुआ। इस सदी के पूर्वार्द्ध में (1901 ई० में) भारत में मात्र महानगर था परन्तु धीरे-धीरे उसमें वृद्धि होने लगी। परन्तु यह वृद्धि दर भी 1911 से 1941 के मध्य स्थित थी किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन महानगरों की संख्या में तीव्र गत से वृद्धि हुई। इसे तालिका संख्या 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. 4

भारत में दस लाखी नगरों की वृद्धि

वर्ष	नगरों की संख्या	जनसंख्या (मिलियन में)	कुल नगरीय जनसंख्या का (%)	दशकीय वृद्धि दर (%)
1901	1	1.51	5.84	-
1911	2	2.76	10.65	83.02
1921	2	3.13	11.14	13.24
1931	2	3.41	10.18	8.86
1941	2	5.31	12.02	54.79
1951	5	11.75	18.81	121.32
1961	7	18.10	22.93	54.10
1971	9	27.83	25.51	53.75
1981	12	42.12	26.41	51.35
1991	23	77.66	32.54	67.76
2001	27	-	-	-

स्रोत : भारत की जनगणना 2001

तालिका संख्या 0.3 के अवलोकन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में दस लाखी नगरों की संख्या में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वृद्धि देखने को मिलती है। देश में उद्योगीकरण की ज्यों-ज्यों वृद्धि हुई त्यों-त्यों ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का नगरों की ओर पलायन होता रहा।

देश में 1950 ई० के पश्चात् भारतीय सरकार द्वारा कृषि, सिंचाई, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा आदि सभी आवश्यक पहलुओं (अंगों) पर ध्यान दिया गया। फलतः कृषि, उद्योग, व्यापार आदि में भारत स्वावलंबी हो गया। भारतीय नागरिकों की प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि हुई। अच्छी सुख-सुविधा की प्राप्ति के लिए तथा बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के लिए भी लोग नगरों की ओर अग्रसर हुए। यही कारण है कि वर्ष 1971, 1981, 1991 एवं 2001 में दस लाखी नगरों की संख्या बढ़कर क्रमशः 9, 12, 23 एवं 27 हो गयी। उपर्युक्त तालिका के अवलोकन के पश्चात् यह विदित होता है कि 1941 ई० तक दस लाखी नगरों की संख्या में मंद गति से वृद्धि हुई। 1941-51 तथा 1981-91 ई० के मध्य इन नगरों में जनसंख्या में क्रमशः 121.3% एवं 67.76% की वृद्धि हुई। वर्ष 1981 ई० तक कोलकाता प्रथम स्थान पर था परन्तु 1991 ई० में देश में मुम्बई प्रथम स्थान पर पहुँच गया। इसी प्रकार सूरत 1951 ई० तक 18वें स्थान पर था, परन्तु 1991 में 12वें स्थान पर पहुँच गया। इस प्रकार दिल्ली, चेन्नई, लखनऊ तथा कानपुर में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी तथा इनके क्रम में परिवर्तन हुआ।

2001 की जनगणना के अनुसार भारत में चार मेगानगरों में (5,000,000) से अधिक जनसंख्या निवास करती है।

3.8 भारत में नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएँ एवं उनका समाधान (Problems Associated with Urbanization and their Solution in India)

सामान्यतः नगरीयकरण का विकास एवं उनसे उत्पन्न समस्याएँ साथ-साथ जन्म लेती हैं। उदाहरणस्वरूप जल की आपूर्ति/ नगर की सफाई, यातायात व्यवस्था, आवश्यक उपयोगी पदार्थों की आपूर्ति आदि अनेक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। नगरों में जनसंख्या की वृद्धि के साथ ही उपर्युक्त सभी आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की कमी महसूस होने लगती है। यदि इन सुविधाओं में कुछ कमी होने लगती हैं तो सामाजिक बुराइयाँ एवं समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। इनमें गंदी बस्तियाँ, निवास स्थानों का अभाव, बेरोजगारी की समस्या, कारखानों में कार्य-संबंधी असंतोष जनक दशाएँ, अमोद-प्रमोद की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव आदि उल्लेखनीय समस्याएँ हैं। नगरों में भोजन पदार्थ, प्रायः शुद्ध नहीं प्राप्त होते हैं। यहाँ सामाजिकता का प्रायः अभाव पाया जाता है। प्रायः समान स्तर के लोगों में ही सामाजिकता तथा शिष्टाचार दिखाई पड़ता है। मनुष्य दूसरे व्यक्ति से अपरिचित जैसा व्यवहार करते हैं। नगरीय जनसंख्या के मध्य सौहार्द आत्मीयता, प्रेम, सहयोग की भावना एकजुटता आदि का प्रायः अभाव पाया जाता है।

नगरीय समस्याओं के संदर्भ में **ममफोर्ड** ने सुझाव दिया है कि ''आधुनिक बड़ा नगर तकनीकी क्षेत्र में अपने आप में सांस्कृतिक अलगाव का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है।

"A city becomes economically unsound, politically unstable, biologically degenerated and socially unsatisfying." —L. Munford.

ममफोर्ड के अनुसार ''एक बड़ा नगर आर्थिक दृष्टि से अवांछनीय, राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर, जैविक दृष्टि से पतन की ओर उन्मुख तथा सामाजिक दृष्टिकोण से असंतोषजनक होता है।''

प्रो० रोबसन के अनुसार ''अधिक समय तक आधुनिक दशाओं में हाथी के समान विशाल आकार वाले नगरों के अनुपातों को न तो और अधिक सहा जा सकता है और न ही उनकी वृद्धि ही वांछनीय है।''

नगरीय समस्याओं के संबंध में **प्रो. ए० डब्लू० एडवुड** ने कहा है कि ''नगरों का विशाल आकार बड़ा ही असंतोषजनक है। यह श्लीपद नामक रोग की तरह ही है।''

"Urban Megalomania is just as regrettable a disease as elephant."

उक्त नगरीय सभी परिभाषाएँ नगरीय समस्याओं को इंगित करती हैं। प्राय: बड़े नगरों में निवास करनेवाले निवासी प्रत्येक दिन दैनिक उपभोग की आवश्यक पदार्थों का अभाव महसूस करते हैं।

प्राय: ऐसा देखा जाता है कि नगरों के केन्द्र में व्यापारिक एवं छोटे-छोटे लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा वस्तुएँ निर्मित होती हैं तथा दुकानों में विक्रय के लिए पहुँचायी जाती है साथ हीं बाजार के समीप रहने की हार्दिक इच्छा प्राय: सभी व्यक्तियों की होती है जिससे वस्तुओं एवं पदार्थों की उपलब्धि में कोई कठिनाई न हो। लेकिन बढ़ती हुई आबादी के कारण नगर के वाह्य किनारे की ओर आवासीय कॉलोनी का निर्माण होने लगता है तथा नगर केन्द्रोन्मुखी हो जाता है। इस प्रकार जैसे-जैसे व्यवसायिक क्षेत्र विकसित होता है वैसे-वैसे निवास-क्षेत्र व्यवसायिक क्षेत्र को घेरते हुए नगर की सीमाओं को विस्तार करते चले जाते हैं। निवास क्षेत्र के पीछे हटने के साथ ही पानी तथा रोशनी की पूर्ति बढ़ने लगती है। नगर की इस अवस्था में प्राय: पुराना व्यवसायिक केन्द्र का आकर्षण कमजोर होने लगता है। नगर की सीमाओं का विस्तार होता है, परन्तु उसका हृदयस्थल कमजोर पड़ जाता है।

ममफोर्ड के अनुसार "What may have been once street of fine mansions is converted into low quarters, boarding houses and tenements usually crowded, often fithy. The last state depopulation deserted houses in mines, no rents, no taxes, a vast economic civil liability."

भारत जैसे विकासशील देश में नगरीय विकास वर्तमान समय में आरंभिक अवस्था में है, फिर भी नगरीय समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं। इसका मुख्य कारण नगरों के आकार एवं उनके घनत्व में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि होना, नगरों के अपने समीपवर्ती क्षेत्रों पर दैनिक आवश्यक सामग्री (खाद्यान्न, दुग्ध पदार्थ, शाक-सब्जी, फल आदि) के लिए बढ़ती हुई निर्भरता, नगरीय सुविधाओं का तेजी से विकास न किया जाना, आर्थिक साधनों की कमी, नगरों को व्यवस्थित रूप से न बसाया जाना आदि उल्लेखनीय हैं। उपर्युक्त

कारणों के चलते नगरों एवं महानगरों में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। क्रमागत रूप में इन सभी समस्याओं एवं उनके समाधानों का विशद वर्णन अपेक्षित है।

हालाँकि नगरों में समस्याओं के उत्पन्न होने के निम्न कारण ये हैं :-

(1) नगरों के आकार एवं उनके घनत्व में वृद्धि होना

(2) आवासीय अथवा स्थान की समस्या

(3) मलिन बस्तियों की वृद्धि

(4) प्रदूषण की समस्या (जल, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण) विशेषकर औद्योगिकीकरण एवं कूड़े-कचड़े द्वारा प्रदूषण।

(5) नगरीय अपराध

(6) नगरीय सुविधाओं का अभाव

(7) स्वास्थ्य चिकित्सा सुविधाओं का अभाव

(8) प्रशासकीय सुविधाओं का अभाव

(9) दैनिक उपभोग की सामग्री का अभाव

(10) मकानों के किराये का ऊँचा होना

(11) नगरीय दुर्दशा

उपर्युक्त समस्याओं एवं उनके समाधान के उपाय का विशद वर्णन पिछले अध्याय 5 में किया गया। यहाँ पुनः उनकी व्याख्या करना समीचीन नहीं होगा।

3.9 निष्कर्ष (Summing-up)

भारत में नगरीकरण के विशद वर्णन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ग्राम, कस्बा, महानगर तथा महानगर एवं को दर्शन आदि में पर्याप्त अंतर देखने को मिलता है। औद्योगिकीकरण का विकास जिन राज्यों अथवा प्रदेशों में अधिक हुआ है उन राज्यों में सर्वाधिक नगरीकरण देखने को मिलता है। साथ ही उन राज्यों में स्थित नगरों में जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि हुई है। भारत में 1901 ई० में दस लाख से अधिक जनसंख्या वाला केवल एक नगर था, किन्तु धीरे-धीरे उसमें वृद्धि हुई। हालाँकि विभिन्न प्रकार की महामारियाँ एवं अन्य आपदाओं के कारण दस लाखी नगरों की संख्या में कोई खास वृद्धि नहीं हुई। यह वृद्धि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शुरू हुई। 1971 एवं 1981 ई० के बाद देश में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं औद्योगीकरण के साथ ही खासकर सुन्नगर (कोनर्वेशन) एवं मेगालोपोलिस जैसे महानगरों में सर्वाधिक जनसंख्या की वद्धि हुई है। यह सूक्ष्म रूप से नगरीकरण को दर्शाता है। भारत में नगरों की विशेषताएँ एवं उनकी महत्ता का वर्णन उस अध्याय का मुख्य केंद्र है। पुनः नगरीकरण से उत्पन्न समस्याओं एवं उनके

समाधान का वर्णन किया गया है। आशा है कि छात्रों को नगरीकरण के संबंध में कुछ जानकारी प्राप्त हो जायेगा।

3.10 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

(1) नगरों की संकल्पना का वर्णन करते हुए नगरीयकरण के अर्थ को परिभाषित कीजिए।

(2) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय नगरों को होनेवाली जनसंख्या की वृद्धि के कारणों का वर्णन अपने शब्दों में करें।

(3) भारत में नगरीकरण की उपनीतियों का वर्णन करते हुए वर्तमान समय का उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

(4) भारतीय नगरों में नगरीकरण से उत्पन्न समस्याओं का वर्णन करते हुए उनकी समस्याओं के समाधान का वर्णन कीजिए।

3.11 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) भारत का भूगोल - डॉ० वीरेन्द्र सिंह चौहान एवं डॉ. अलका गौतम, रस्तोगी पब्लिकेशन्स गंगोत्री खजांची रोड, मेरठ।

(2) नगरीय भूगोल - डॉ० सुरेश चन्द्र बंसल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ

(3) भारत का भूगोल - डॉ० चतुर्भुज मामोरिया एवं डॉ० एस० सी० जैन, 2003 साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा

(4) भारत का वृहद् भूगोल- डॉ० अलका गौतम शारदा पुस्तक भवन, वि० वि० रोड, इलाहाबाद-2

❖❖❖

इकाई-5 पाठ - 4

भारत में नगरीकरण की समस्याएँ
(Problems of Urbanization in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

4.0 उद्देश्य (Objective)

4.1 परिचय (Introduction)

4.2 ग्राम, नगरीय ग्राम, कस्बा, नगर एवं महानगर की संकल्पना (Concept of Village, Urban Village, Town, City and Metropolis)

4.3 भारतीय नगरों की विशेषताएँ (Salient Features of Indian Cities)

4.4 भारत में नगरीकरण की समस्याएँ (Problems of Urbanization in India)

4.5 नगरीय समस्या हेतु समाधान या सुझाव (Suggestion for Urban Problems)

4.6 निष्कर्ष (Summing-up)

4.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

4.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

4.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय में हम जान पायेंगे कि बस्तियों का उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। प्राय: अनेक नगरों का प्रारंभ ग्रामीण बस्तियों के रूप में हुआ तदुपरान्त उनमें जनसंख्या की वृद्धि हुई एवं उसके कार्य में परिवर्तन हुआ तथा क्रमश: आकार बढ़ता गया। वह ग्राम क्रमश: कस्बा, नगर, महानगर आदि में परिणत होता गया। जनसंख्या की अधिक वृद्धि तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु (कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा आदि आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु) नगरों का आकार बढ़ता गया तथा वर्तमान स्थिति में पहुँच गया। साथ ही नगरों में दिनानुदिन समस्याएँ भी बढ़ती गईं। इसके समाधान पर भी विचार करना इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य है।

4.1 परिचय (Introduction)

सामान्यत: मानव द्वारा निर्मित आवासों का संगठित समूह बस्ती कहलाता है। मनुष्य जब गुफाओं को छोड़कर स्वनिर्मित आवासों में आया तो वह बस्तियों के निर्माण में लग गया। बस्तियाँ मानव समुदाय के

मकानों अथवा इमारतों का वह समूह है जिनमें निवास करने कार्य करने कार्यालय गोदाम उद्योग, व्यापार तथा अनेक कार्यों के लिए किया जाता है। बस्तियाँ मानव द्वारा निर्मित सांस्कृतिक पहलू का प्रतिफल है। यह मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। इसके द्वारा मनुष्य को सुरक्षा प्राप्त होती है। मनुष्य धूप, वर्षा एवं शीत से अपनी रक्षा करने के लिए घरों में रहता है। एक साथ, परिवार, कुल, गोत्र आदि के समूह में रहने के कारण बस्तियों का उद्‌भव हुआ। मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त हैं। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उन्हें दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। फलत: धीरे-धीरे बस्तियों का आकार बढ़ता गया। प्रो. आर. सिंह गिल. के शब्दों में "Settlement represents an organised colony of human beings, including the buildings in which they live or work or store or use them otherwise and the tracks or streets over which their movements take place. These are the occupance unit of the earth surface."

4.2 ग्राम, नगरीय ग्राम, कस्बा, नगर एवं महानगर की संकल्पना (Concept of Village, Urban, Town, City and Metropolis)

सामान्यत: नगरों एवं महानगरों का चरण किसी-न-किसी ग्राम से शुरू होता है तथा धीरे-धीरे वह ग्राम कस्बा, शहर, नगर एवं महानगर के रूप में परिणत हो जाता है।

(I) ग्राम (Village) :- सामान्यत: ग्राम शब्द का प्रयोग आदि काल से होता आया है। समूह में स्थायी ढंग से निवास करने का उल्लेख ऋग्वेद में भी हुआ है। ग्राम शब्द की उत्पति ग्रिहा (Griha) अथवा गिरोह अथवा झुंड के उपरान्त ही हुआ है। सामान्यत: गोत्र के अनुसार ग्राम की रचना प्रारंभ हुई। महाभारत में भी ग्राम शब्द का प्रयोग इसी प्रकार किया गया।

(II) नगरीय ग्राम (Urban Village) :- इसमें अर्द्धनगरीय विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं इसे 'ग्रामर' Rurban केन्द्र कहते हैं।

(III) कस्बा शहर (Town) :- सामान्यत: कस्बा से आशय मानवीय स्थानापन्नता का वह स्वरूप है जिसमें ग्रामीण एवं नगरी दोनों प्रकार के तत्वों का योगदान रहता है। कस्बा, गाँव की अपेक्षा अधिक क्रियाशील होता है। वह सभी स्थान जहाँ नगरपालिका, छावनी, बोर्ड या नोटिफाइड क्षेत्रीय समिति स्थापित हो तथा जनसंख्या कम से कम 5,000 हो। von Richtofen के अनुसार, "A town consists of an organised groups in which normally the main occupations are concerned with commerce and industry as opposed to agricultural pursuits."

नगर (City) :- सामान्यत: नगर शब्द से आशय ऐसे धनी जनसंख्या या अट्टालिकाओं का समूह जहाँ एक विस्तृत भूमि पर व्यापारिक, प्रशासनिक, परिवहन, औद्योगिक, शैक्षणिक आदि कार्य किए जाते हैं तथा वहाँ पायी जानेवाली जनसंख्या कृष्येत्तर कार्य में लगी हुई है। नगरों में विशेषत: द्वितीयक, तृतीयक, चतुर्थक, व्यवसाय अपनाया जाता है। **वॉन रिन्चथोफेन** के अनुसार ''नगर के अन्तर्गत एक ऐसा

सुव्यवस्थित वर्ग निहित है जहाँ का मुख्य व्यवसाय-वाणिज्य और उद्योग से संबंधित होता है और ये धंधे कृषि कार्यों से सर्वथा भिन्न होते हैं।

प्रो० वाइडल डिला ब्लाश के अनुसार ''नगर सामाजिक संगठन वाला व्यापक क्षेत्र होता है तथा यह सभ्यता की उसकी अवस्था को प्रतिनिधित्व करता है। "A city is a social organisation of much greater scope; it is the expression of a stage of civilization which certain have not achieved and localities which they may perhaps never of themselves attain."

अल्फ्रेड बेगनर ने नगर में मानव की व्यापार क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु माना है। **प्रो० विलियम ओलासन** ने नगर को विशेष प्रकार के कार्यों में रत एक बहुत बड़ा जनसमूह माना है तथा यहाँ पर विविध प्रकार के कार्य किए जाते हैं। **पियरी जार्ज** ने नगर को कृषि क्षेत्रों के मध्य स्थित व्यापारिक, औद्योगिक, प्रशासनिक आदि कार्यों से जुड़ा हुआ केन्द्र माना है।

भारत की जनगणना विभाग ने स्थानों के आकार, जनसंख्या का घनत्व, व्यवसायों तथा स्थानीय प्रशासनिक कार्य के आधार पर ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में निम्नलिखित विभेद प्रस्तुत किया है:-

(I) 5000 से अधिक जनसंख्या हो

(II) कम से कम 75% पुरुष जनसंख्या गैर कृषीय कार्यों में संलग्न हो।

(III) जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति वर्ग कि०मी० से अधिक हो।

(IV) वहाँ नगरपालिका या कन्टोन्मेंट बोर्ड या नोटिफाइड क्षेत्र हो।

(V) महानगरों की जनसंख्या एक लाख या इससे अधिक हो।

महानगर (मेट्रोपोलिस Metropolis) :-

सामान्यत: नगरों के विशाल आकार वाले नगरीय क्षेत्र को महानगर की संज्ञा दी जाती है जहाँ प्रादेशिक राजधानी का मुख्यालय स्थापित होता है तथा उसकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक होती है। महानगर का प्रमुख कार्य व्यापारिक वस्तुओं को एकत्र एवं वितरित करना है। यह अपने प्रदेश के प्राथमिक एवं तैयार माल के उत्पादन को एकत्र करता है तथा वस्तुएँ तैयार करता है तथा उसको पुनर्वितरण करना है। इन सभी कार्यों की विशेषता पर उसके प्रदेश की विशेषता का प्रभाव अवश्य होता है।'' प्रो० N.B. Gras के अनुसार

"Metropolitan economy is the organisation of producers and consumers mutually dependent for goods and services where in their wants are supplied by a system of exchange. Concentrated in a large city which is the focus of local trade and the centre through which normal economic relation with the outside are established and maintained."—N.B. Gras

मेगालोपोलिस Megalopolis

सामान्यत: अनेक बड़े नगरों के सम्मिलित समूह से एक बड़े नगरीय क्षेत्र का निर्माण होता है जिसे मेगालोपोलिस कहा जाता है। इसके उदाहरण में बंगलोर, चेन्नई, दिल्ली, अहमदाबाद, पुणे आदि उल्लेखनीय महानगरों को सम्मिलित किया जा सकता है।

कोनर्बेशन Conurbation

सामान्यत: यह एक बड़ा नगरीय क्षेत्र होता है जिसमें एक बड़ा नगर तथा अनेक छोटे नगर मिल जाते हैं। उदाहरणस्वरूप कलकत्ता (कोलकाता) मेट्रोपोलिटन क्षेत्र में 85 छोटे तथा बड़े नगर मिलकर एक कोनर्वेशन का निर्माण करते हैं। मुम्बई भारत का दूसरा कोनर्वेशन का उदाहरण है।

4.3 भारतीय नगरों की विशेषताएँ (Salient features of Indian Cities)

भारतीय नगरों की उत्पति वर्ष 2500 ई० पूर्व हुई। सिंधु घाटी की सभ्यता के विकास के समय नगरों की उत्पति हुई। भारतीय नगर प्राचीन काल में तथा मुगल काल में राजधानी या प्रशासनिक नगर के रूप में विकसित हुए। पाटलिपुत्र में सम्राट अशोक की राजधानी थी। दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) हस्तिनापुर की राजधानी थी। इसी प्रकार व्यापारिक केंद्र के रूप में कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, कोच्चि, विशाखापट्टनम आदि नगरों का विकास हुआ।

शैक्षणिक संस्थानों के रूप में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वाराणसी आदि उल्लेखनीय नगर प्रसिद्ध थे। इन नगरों का विकास उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थानों के रूप में हुआ। ब्रिटिश शासनकाल में देश के अन्तर्गत विभिन्न केन्द्रों पर टाटा, आसनसोल, वर्णपुर, कुल्टी, दुर्गापुर, राउरकेला, बोकारो, भिलाई, भद्रावती आदि उल्लेखनीय नगरों का विकास लोहा-इस्पात के उद्योग की स्थापना के बाद हुआ। कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, मदुराई, सूरत, भड़ौच, अहमदाबाद, सूती वस्त्र उद्योग, सीतामढ़ी, रीगा, मशरक क्रमश: चीनी उद्योग, कानपुर, चमड़ा उद्योग, बरौनी तेल शोधन शाला के लिए सिन्दरी खाद के कारखाना के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं उद्योगों के कारण इन नगरों का क्रमश: विकास हुआ।

1901 से 1931 के मध्य अकाल, इनफ्लुएंजा जैसी महामारी (हैजा, प्लेग, मलेरिया आदि) के कारण नगरीय जनसंख्या की वृद्धि के बदले ह्रास हो गया। इस अवधि में कृषि में भी मंदी हुई तथा 1931-41 के मध्य द्वितीय विश्वयुद्ध एवं 1941-51 के मध्य देश में विभाजन का असर भारतीय नगरों का असर भारतीय नगरों को विकास पर पड़ा लगभग 50 वर्षों की अवधि में नगरों का विकास धीमी गति से हुआ। परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में औद्योगीकरण पर जोर दिया गया तथा देश के खनिज संसाधनों, वन संसाधनों एवं कृषि संसाधनों पर आधारित उद्योगों की स्थापना हुई तथा रोजगार की तलाश में ग्रामीण युवकों का नगरों की ओर पलायन हुआ। इस प्रकार नगरीय जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। धीरे-धीरे नगरों के आकार में वृद्धि होती गई।

प्राय: भारतीय ग्रामीण जनसंख्या रोजगार के उद्देश्य से नगरों में अधिक प्रवास करती है। फलत: निम्न स्तरीय जीवन व्यतीत करते हैं फिर भी वे अनेक कठिनाइयों को सहन करते हुए भी वहाँ रहना पसन्द करते हैं। इससे नगरीय गुणवता प्रभावित होती है।

यद्यपि भारत के बड़े नगरों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बनती जा रही है वहीं उस अनुपात में छोटे नगरों में ग्रामीण जनसंख्या की गतिशीलता प्राय: कम देखी जा रही है। औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्रों में अधिक लोग रोजगार निवास करना अधिक पसन्द करते हैं।

भारतीय नगरों का विकास प्राय: द्वितीयक कार्यों की अपेक्षा तृतीयक कार्य के आधार पर हो रहे हैं। उत्तरी तथा पूर्वी भारत की अपेक्षा दक्षिणी एवं पश्चिमी भारत में नगरीयकरण का विकास अपेक्षाकृत अधिक हुआ है। इस विकास के लिए उत्तरदायी कारकों में ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संसाधन आदि उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान समय में नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है तथा ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर रोजगार के लिए अधिक संख्या में पलायन जारी है। फलत: बड़े नगरों में जीवन की गुणवता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वर्तमान समय में दिल्ली को विश्व के दूसरे प्रदूषित नगर की श्रेणी में चिह्नित किया गया है।

4.4 भारत में नगरीकरण की समस्याएँ (Problems of Urbanization in India)

सामान्यत: जिस गति से नगरों का विकास होने लगता है उसी गति से नगरों में समस्याओं का जन्म होने लगता है। उदाहरणस्वरूप जल की आपूर्ति, नगर की सफाई, यातायात व्यवस्था, आवश्यक उपयोगी वस्तुएँ आदि। नगरों में जनसंख्या वृद्धि के साथ ही इन सभी सुविधाओं की आवश्यकता महसूस होने लगती है तथा इनकी कमी होने पर नगरों एवं महानगरों में अनेक समस्याएँ तथा सामाजिक बुराइयाँ भी उत्पन्न होने लगती हैं। इनमें गंदी बस्तियाँ, निवास स्थानों का अभाव, बेरोजगारी की समस्या, कारखानों, कार्य-संबंधी असंतोष जनक दशाएँ, आमोद-प्रमोद तथा स्वास्थ्य सेवाओं में कमी पायी जाती है। यहाँ भोजन की वस्तुएँ प्राय: शुद्ध नहीं मिलती तथा सामाजिकता का अभाव पाया जाता है। समान स्तर के लोगों में ही सामाजिकता तथा शिष्टाचार दिखाई पड़ता है। मनुष्य दूसरे से अपरिचित जैसा व्यवहार करते हैं। नगरीय जनसंख्या के मध्य सौहार्द, आत्मीयता, प्रेम, सहयोगी की भावना, एकजुटता आदि (ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में) का प्राय: अभाव पाया जाता है।

नगरीय समस्याओं के संदर्भ में ममफोर्ड ने सुझाव दिया है कि ''आधुनिक बड़ा नगर तकनीकी क्षेत्र में अपने आपमें सांस्कृतिक अलगाव का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है।'' "A city becomes economically unsound, politically unstable, biological degenerated and socially unsatisfying." C. Mumford. **ममफोर्ड** के अनुसार ''एक बड़ा नगर आर्थिक दृष्टि से अवांछनीय राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर जैविक दृष्टि से पतन की ओर उन्मुख तथा सामाजिक दृष्टिकोण से असंतोषजनक होता है।''

प्रो० रोबसन के अनुसार ''अधिक समय तक आधुनिक दशाओं में हाथी के समान विशाल आकार वाले नगरों के अनुपातों को न तो और अधिक सहा जा सकता है और न ही उनकी वृद्धि की वांछनीय है।''

नगरीय समस्याओं के संबंध में **प्रो० ए० डब्लू० एडवुड** ने कहा है कि ''नगरों का विशाल आकार बड़ा ही असंतोषजनक है। यह श्लीपद नामक रोग की तरह ही है।'' "Urban magalomania is just as regrettable a disease as elephants."

उक्त सभी परिभाषाएँ नगरीय समस्याओं को इंगित करती हैं। प्राय: बड़े नगरों में निवास करनेवाले निवासी दैनिक उपभोग की आवश्यकताओं का अभाव महसूस करते हैं।

प्राय: यह देखा जाता है कि नगरों के केन्द्र में व्यापारिक एवं छोटे-छोटे लघु एवं कुटीर उद्योगों के द्वारा वस्तुएँ निर्मित होत हैं तथा दुकानों में विक्रय के लिए पहुँचायी जाती हैं। साथ ही बाजार के समीप निवास करने संबंधी हार्दिक इच्छा सभी को होती है। जिससे वस्तुओं की प्राप्ति में कोई कठिनाई न हो, लेकिन बढ़ती हुई आबादी के कारण नगर के वाह्य किनारे की ओर आवासीय कॉलोनी हो जाता है। इस प्रकार जैसे-जैसे व्यवसायिक क्षेत्र विकसित होते हैं वैसे-वैसे निवास-क्षेत्र व्यवसायिक क्षेत्र को घेरते हुए नगर की सीमाओं का विस्तार करते चले जाते हैं। निवास क्षेत्र के पीछे हटने के साथ ही पानी तथा रोशनी की पूर्ति बढ़ने लगती है।

नगर की इस अवस्था में पुराना व्यवसायिक केन्द्र का आकर्षण प्राय: कमजोर होने लगता है। नगर की सीमाओं का विस्तार होता है परन्तु उसका हृदय स्थल कमजोर पड़ जाता है। उपर्युक्त विचार **ममफोर्ड** ने प्रस्तुत किया है। "What may have been once a street of fine mansions is converted into low quarters, boarding houses and tenaments usually crowded often filthy. The last state depopulation, deserted houses in mines, no rents no taxes, a vast economic civil liability."

भारत जैसे विकासशील देश में नगरीय विकास वर्तमान समय में आरंभिक अवस्था में है, फिर भी नगरीय समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं। इसका मुख्य कारण नगरों के आकार एवं उनके घनत्व में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि होना नगरों के अपने समीपवर्ती क्षेत्र पर दैनिक आवश्यक सामग्री (दुग्ध, शाक-सब्जी तथा अन्य उपयोगी की वस्तुएँ) पर बढ़ती हुई निर्भरता, नगरीय सुविधाओं का तेजी से विकास न किया जाना, आर्थिक साधनों की कमी, नगरों को व्यवस्थित रूप से न बसाया जाना आदि उल्लेखनीय हैं। उपर्युक्त कारणों के चलते नगरों एवं महानगरों में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। क्रमागत रूप में इन सभी समस्याओं का विशद् वर्णन अपेक्षित है :-

नगरों के आकार एवं उनके घनत्व में वृद्धि का होना।

भारत में नगरों की संख्या तथा उनकी जनसंख्या अथवा आकार में निरन्तर वृद्धि हो रही है। 2001 की जनगणना के अनुसार प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम एवं षष्टम श्रेणी के नगरों की संख्या क्रमश: 393, 401, 1151, 1344, 888 एवं 191 है। भारत में इन नगरों की जनसंख्या अथवा इनके आकार में वृद्धि देखने को मिलती है। उदाहरण स्वरूप दिल्ली की जनसंख्या 1901 में मात्र 2 लाख थी जिसमें क्रमश: वृद्धि होती गयी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1951 ई० में 14.5 लाख थी इसके पश्चात् 1961 ई० में 23.6

लाख हो गयी तथा 1991 में बढ़कर 84 लाख तक पहुँच गयी। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में चार मेगा नगर हैं जिनमें ग्रेटर मुम्बई, कोलकाता UA, दिल्ली UA, तथा चेन्नई भी हें इनकी जनसंख्या 5,000 000 से अधिक है भारत के इन चार महानगरों में जनसंख्या का घनत्व संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, जापान आदि देशों की तुलना में सापेक्षिक रूप से अधिक है। एक सर्वेक्षण के अनुसार न्यूयार्क में 25,000; शिकागों में 16,400, लन्दन 26.618, मास्कों में 40,800, पेरिस में 67.976 और टोकियो में 37,216 मनुष्य प्रति वर्गमील निवास करते हैं। दूसरी ओर भारत में स्थित महानगरों में कलकता में 73,182, मुम्बई में 48,400, चेन्नई में 22,300, अमृतसर में 24,800, दिल्ली में 55,000 व्यक्ति प्रति वर्गमील निवास करते हैं।

दूसरी ओर नगरों एवं महानगरों में जनसंख्या के असमान वितरण एवं घनत्व के कारण भी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है।

(2) स्थान की समस्या (Problems of Space) :-

नगरों में जनसंख्या की वृद्धि के साथ ही साथ उपान्त की ओर तथा ग्रामीण क्षेत्रों की ओर मकानों या कॉलोनी का निर्माण प्रारंभ हो जाता है। फलतः उर्वर कृषि भूमि पर दबाव बढ़ने लगता है तथा जनसंख्या की वृद्धि के कारण भूमि का अतिक्रमण होने लगता है।

(3) आवासीय समस्या (Problems of Residence) :-

नगरों में जनसंख्या के घनत्व की वृद्धि के साथ-साथ निवास करने के लिए भवनों की कमी हो रही है। प्रायः भवनों की अधिक संख्या औद्योगिक, व्यावसायिक, प्रशासनिक आदि नगरों एवं महानगरों में देखने को मिलती है। इसी कारण मकान कई मंजिलें या अट्टालिकाओं का निर्माण किया जाता है। अपार्टमेंट का निर्माण इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। 1961 में किए गए एक सर्वेक्षण के आधार पर पता चला है कि मुम्बई में 66 आदमी एक मकान में रहते हैं अर्थात एक छोटे से कमरे में ही पूरा परिवार रहता है। 10-15 व्यक्ति एक छोटे से कमरे में निवास करते हैं। यहाँ 77,000 व्यक्ति सीढ़ियों एवं पशुओं के स्थान में रहकर अपना जीवनयापन करते हैं। यहाँ लगभग 68% सड़कों पर रहकर रात गुजारते हैं। भारत में लगभग 16% से 19% परिवार 10 वर्ग मीटर से कम जगह में निवास करते हैं तथा 51% से 54% परिवार लगभग 20 वर्गमीटर से कम जगह में गुजारा करते हैं। एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार नगरों में मात्र 45 प्रतिशत मकान पक्के हैं तथा 77% घर एक या दो कमरों के हैं। भारतीय नगरों में प्रतिवर्ष लगभग 1.7 मकानों की कमी होती जा रही है। फलतः मकानों के किराये में अत्यधिक वृद्धि होती जा रही है जिसका असर मध्यम एवं निम्न वर्गों के लोगों की आय पर पड़ता है। इन्हें अपनी आय का 30-35% हिस्सा किराये पर व्यय करना पड़ता है।

(4) मलिन बस्तियों की वृद्धि (Growth of Slums) :-

सामान्यतः नगरों एवं महानगरों में बढ़ती हुई जनसंख्या के घनत्व तथा मकानों की कमी तथा ऊँचे

दर पर किराये के मकानों की उपलब्धि के कारण मलिन बस्तियों का जन्म होता है। प्राय: मलिन बस्तियों में एक-दो कमरों की झोपड़-पट्टियाँ होती हैं जो सरकारी तथा सार्वजनिक स्थलों पर बनी होती हैं। इसके अतिरिक्त निजी भूमि तथा नगरों के पुराने क्षेत्रों में भी ऐसी बस्तियाँ पायी जाती हैं। इनकी दीवारें प्राय: ईंट अथवा मिट्टी की बनी होती है किन्तु नीची छतों वाली होती हैं। इनका छाजन पुरानी टीन की चादरों, बाँस की चटाइयों, पोलिथीन, बोरे तथा छप्पर की बनी हुई होती हैं। इनमें खिड़कियों, रोशनदानों तथा अन्य सुविधाओं का प्राय: अभाव पाया जाता है। प्राय: ऐसे मकानों में कारखानों के श्रमिक, कुली, ठेले वाले दैनिक वेतन भोगी आदि सामान्य कार्य करने वाले मजदूर तबके के लोग रहते हैं।

नगर नियोजन संगठन के एक नवीनतम अनुमान के आधार पर ऐसा पता चलता है कि प्राय: भारत की 21% नगरीय जनसंख्या मलिन बस्तियों में निवास करती हैं। हाल में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर पता चला है कि दिल्ली तथा मुम्बई की क्रमश: 40% एवं 44% जनसंख्या झोपड़-पट्टियों में निवास करती है। इन झोपड़ पट्टियों का निर्माण ग्रामीण क्षेत्रों की प्रवासी जनसंख्या द्वारा किया जाता हैं। ये आमतौर पर किसान एवं अकुशल श्रमिक होते है जो नगरों में रोजगार की तलाश के लिए आया करते हैं। भारतीय नगरों में रहनेवाला प्रत्येक पाँचवा व्यक्ति गंदी अथवा मलिन बस्तियों में रहता है। कोलकाता, चेन्नई, अहमदाबाद, कानपुर, पटना आदि महानगरों में भी 35% से अधिक जनसंख्या ऐसी ही झोपड़ पट्टियों में निवास करती है। इन बस्तियों की आर्थिक एवं सामाजिक दशा बहुत ही दयनीय है। इनमें निवास करने वाली जनसंख्या को पेयजल, मल-निकासी, अपवाह, शौचालयों, बिजली, पक्की सड़कों, गलियों आदि मूलभूत सुविधाओं का प्राय: अभाव पाया जाता है। हाल के एक सर्वेक्षण के अनुसार मुम्बई तथा कोलकात्ता में निवास करने वाली जनसंख्या में से 80% को स्नानागार एवं 90% को पृथक शौचालयों की कमी है। ऐसी बस्तियों में असामाजिक तत्वों एवं अपराधिक तत्वों के अड्डे बन जाते हैं, जिनकी दिनचर्या में प्राय: शराब अथवा मादक द्रव्य का सेवन, हिंसा, सामाजिक अपराध, वेश्यावृति आदि घिनौने प्रवृति की समस्याएँ परिलक्षित होती हैं।

(5) प्रदूषण की समस्या (Problems of Pollution) :-

(1) औद्योगिक प्रदूषण (Industrial Pollution) :-औद्योगिक विकास एवं परिवहन के साधनों के विकास के कारण नगरीय, पर्यावरणीय बहुत प्रदूषित हुआ है। वायु, जल, ध्वनि तथा अपशिष्ट पदार्थों के द्वारा प्रदूषण अधिक हआ है, जिसका प्रभाव वहाँ रहने वाली जनसंख्या पर पड़ता है। भारत में औद्योगिक विकास के साथ-साथ प्रदूषण की मात्रा में वृद्धि होती जा रही है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों की चिमनियों से अधिकांश मात्रा में धुआँ (सल्फर ऑक्साइड) का उत्सर्जन होता है। औद्योगिक नगरों में अत्यधिक धुएँ के उत्सर्जन से धुल का गुम्बद Dust domes जैसा प्रतीत होता है। NCERT की रिपोर्ट (1981) के अनुसार कोलकाता महानगर में उद्योगों की चिमनियों से लगभग 600 टन प्रदूषक उत्सर्जित होते हैं। प्राय: औद्योगिक नगरों, में वायु की गुणवता के ह्रास के कारण विषैली गैसों तथा गैस कणों (Acrosis) का उत्सर्जन होता है।

नगरों में बढ़ते हुए वाहनों द्वारा वायु प्रदूषण (Air pollution By Vehicles in the City) :-

भारत में उद्योगों के विकास के साथ ही साथ परिवहन के साधनों में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है। इन वाहनों की गतिशीलता के कारण सम्पूर्ण नगर प्रदूषित हो जाता है। एक नवीन सर्वेक्षण के अनुसार दिल्ली में परिवहन के साधनों से 60% वायु प्रदूषण होता है। मुम्बई में स्वचालित वाहनों से लगभग 52% वायु प्रदूषित होता है। NCERT की रिपोर्ट (1981) के अनुसार कोलकाता महानगर में वाहनों द्वारा 360 टन प्रदूषक उत्सर्जित किए जाते हैं। इस प्रकार भारत के उल्लेखनीय चार महानगरों (दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई एवं चेन्नई) प्रदूषण के दृष्टिकोण से विश्व के सबसे प्रदूषित नगरों की श्रेणी में रखे जाते हैं।

(III) जल प्रदूषण (Water Pollution) :- प्राय: जल प्रदूषण की समस्या प्रत्येक नगरों एवं महानगरों में देखने को मिलती है। यह समस्या पेय जल की आपूर्ति के स्रोतों द्वारा तथा पाइप लाइनों में सीवेज (गंदे जल) के मिलने से उत्पन्न होती है। सामान्यत: नगरों की नालियों के सीवेज तथा दूषित जल को नदियों एवं झीलों में गिराया जाता है। फलत: नदियों एवं झीलों का जल पीने योग्य नहीं रह जाता है। कारखानों के प्रदूषित अपशिष्ट को भी नदियों में गिराया जाताा है जिससे उनका जल प्रदूषित हो जाता है। फलत: नगरवासियों के स्वास्थ्य पर इसका प्रतिकूल असर पड़ता है।

ध्वनि प्रदूषण (Noise Pollution) :- नगरों एवं महानगरों में वाहनों औद्योगिक संयंत्रों, लाउडस्पीकर, सायरन आदि द्वारा अत्यधिक शोर उत्पन्न होता है। कारण कि यह शोर ध्वनि के सुरक्षित स्तर से अधिक बलवती होता है। इस कारण इसे ध्वनि प्रदूषण कहते हैं। देश के कुछ महानगरों में शोर के अत्युच्य को दर्शाया गया है, जिनमें चेन्नई (89 डेसीबल), मुम्बई (85 डेसीबल), दिल्ली (89 डेसीबल), कोलकाता (87 डेसीबल), कोच्चि (80 डेसीबल), मदुराई एवं कानपुर (75 डेसीबल) तथा तिरूवनन्तपुरम (70 डेसीबल) आदि उल्लेखनीय है।

कूड़े-कचरे द्वारा प्रदूषण (Pollution by Wastes) :-

नगरों एवं महानगरों में अपशिष्ट पदार्थों के द्वारा भी प्रदूषण की वृद्धि होती है, जिनमें रंग सहित लोहा के टूटे-फूटे टुकड़े, टिन, टूटे हुए काँच के टुकड़े, शीशा, प्लास्टिक, जार, डिब्बे, पोलिथिन के थैले, घरेलू कचरा, कारखानों के अपशिष्ट पदार्थ, सब्जी मंडी की सड़ी-गली सब्जियाँ दुकानों के कचरे इत्यादि उल्लेखनीय हैं। नालियाँ या बड़े-बड़े नाले भी इन अपशिष्ट पदार्थों से धीरे-धीरे संकीर्ण होते जा रहे हैं, फलत: नालियों द्वारा जल निकास अच्छी तरह नहीं हो पाता है। नालियों के अतिरिक्त सड़कों पर गंदे जल का बहाव अक्सर देखने को मिलता है। अत: नाली का पानी चुहानी (घर में) तक पहुँच जाता है। सड़कों के किनारे चटपटी (फास्ट फुड) दुकानों के समीप अधिक जूठे पत्ते एवं प्लेट सड़कों एवं नालियों के किनारे तथा नालियों में फेंकने से भी नालियों का पानी अवरूद्ध हो जाता है। प्रदूषण की वृद्धि में आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति तथा बोध की कमी का असर अधिक पड़ा है। प्राय: भारतीय नगरों में उपर्युक्त कचरे को यथास्थान फेंक दिया जाता है। अत: इन कचरों के उचित निस्तारण की व्यवस्था यदि किया जाय तो

प्रदूषण से मुक्ति मिल सकेगा। खासकर अस्पतालों के समीप अनेक अपशिष्ट पदार्थों को भी असावधानीपूर्वक फेंक दिया जाता है जिससे घातक बीमारियों के फैलने का खतरा होता है।

(6) नगरीय अपराध (Urban Crimes) :-

बढ़ती हुई बेजराजगार उपभोग संबंधी स्पर्द्धा, भौतिकवादी संस्कृति, आर्थिक एवं सामाजिक विषमताएँ आदि कारणों से नगरों में अपराध का जन्म होता है। दिलचस्प बात तो यह है कि गरीब एवं निर्धन के अतिरिक्त सभ्रांत, बड़े लोग एवं धनी परिवार के लड़के (लोग) भी नगरीय अपराध में संलग्न रहते हैं। ऐसे अपराधी राजनीतिज्ञों, प्रशासनिक स्तर के पदाधिकारियों एवं अच्छी पहुँच वाले व्यक्तियों द्वारा संरक्षण पाते हैं।

नगरीय सुविधाओं का अभाव (Lack of Urban Facilities) :-

प्राय: नगरों एवं महानगरों में जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि के साथ ही साथ आधारभूत संसाधनों (पेयजल, आवागमन के साधनों की कमी, बिजली आदि) की कमी होने लगती है। नगरों में ग्रीष्म ऋतु में पानी-बिजली के लिए हाहाकार मचा रहता है। भारत में कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली, चेन्नई सहित अनेक नगरों में पेयजल की आपूर्ति सुचारू रूप से नहीं हो पाती है। अत: पेय जल की समस्या बहुत ही जटिल है। जलापूर्ति प्रदान करनेवाली पाइप भी फट गयी हैं। फलत: नालियों के दूषित जल भी उसमें प्रवेश कर जाता है, जिससे अनेक यकृत रोग, क्षय रोग आदि नगरवासियों को अपना शिकार बनाती है। भारत सरकार द्वारा नियुक्त Environmental Hygiene Committee (1946) के अनुसार 2 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में प्रतिव्यक्ति औसतन 45 गैलन पीने का पानी मिलना चाहिए किन्तु भारत के प्रमुख महानगरों जैसे मुम्बई (42), लखनऊ (32), पूना (32), हैदराबाद (30), कानपुर (22), आगरा (22), मैसूर (21), दिल्ली (20), चेन्नई (17 गैलन) ही पेयजल उपलब्ध हो पाता है, जो बहुत ही कम है। नदियों के किनारे बसे नगरों से प्रदूषित जल (नालियों का प्रदूषित जल गंदी (स्लम) तथा औद्योगिक कचरा पर्याप्त मात्रा में नदियों में गिराया जाता है। फलत: नदियों का जल भी प्रदूषित हो जाता है जो पीने तथा स्नान करने योग्य भी नहीं रह जाता है। प्रदूषित जल को पुन: सफाई करके नगरों में जल की आपूर्ति की जाती है।

नदियों एवं महानगरों में परिवहन के साधनों की बढ़ती संख्या एवं सड़कों की संकीर्णता के कारण अक्सर दुर्घटनाएँ घटित होती रहती हैं। साथ ही यातायात बाधित होता रहता है तथा ध्वनि एवं वायु प्रदूषण भी होता रहता है। नगरों के आकार में वृद्धि के साथ-साथ बिजली की आपूर्ति अधिक होनी चाहिए किन्तु ऐसा नहीं है। फलत: पिद्युत आपूर्ति कम होने के कारण एक तरफ नगर अंधेरे में डूब जाता है तो दूसरी ओर जलापूर्ति बाधित होती है। अत: बिजली एवं पानी के लिए हाहाकार होने लगता है।

स्वास्थ्य चिकित्सा सुविधाओं का अभाव (Lack of Medical facilities in Urban Centres):-

नगरों की सड़कों, नालियों, गलियों में गंदगी का अंबार सा लगा रहता है। फलत: नगरवासी अनेक रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। अत: नगरों में सफाई की उचित व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। दूसरी बात है कि नगरों के आकार में वृद्धि के साथ ही साथ सरकारी अस्पताल की अच्छी सुविधाएँ होनी

चाहिए। परन्तु इन सुविधाओं की कमी नगरवासियों को झेलनी पड़ती है। महँगी चिकित्सा सुविधाओं से सामान्य स्तर के लोग वंचित रह जाते हैं।

प्रशासनिक सुविधाओं का अभाव (Lack of Administration Facilities) :- नगरों में जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ बेरोजगारी, बलात्कार अपहरण आदि नगरीय अपराध को नियंत्रित करने हेतु प्रशासनिक इकाइयों की संख्या में वृद्धि होनी चाहिए, परन्तु ऐसा देखने को नहीं मिलता है। नगर नगरपालिका, नगर निगम अथवा नगरपालिका का कार्य क्षेत्र भी बढ़ने लगता है। नगरों की सफाई, पेयजलापूर्ति, बिजली, सड़कें, सीवर, जल प्रवाह की सुविधाएँ, शिक्षा, मनोरंजन की सुविधाओं को मुहैया कराना भी इनका कार्य है। अरग प्रशासनिक स्तर पर इन मूलभूत सुविधाओं का लाभ नगरवासियों को प्राप्त होता तब वे सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते इसके अभाव में जीवनयापन में कठिनाई होती है।

(10) दैनिक उपभोग सामग्री का अभाव (Lack of Daily Consumer Goods) :-

सामान्यत: नगरों के बाहरी ग्रामीण क्षेत्रों को प्रभाव क्षेत्र कहा जाता है जहाँ से प्रतिदिन नगरवासियों को ताजी शाक-सब्जियाँ, फल, दूध-दही तथा इससे निर्मित खाद्य पदार्थ, प्राप्त होते रहते हैं। परन्तु महानगरों में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण मांग अधिक रहती है तथा उस अनुपात में इसकी आपूर्ति ग्रामीण क्षेत्रों से आवश्यकता के अनुसार नहीं हो पाती है। दूर से लाये गए पदार्थ महँगे होते हैं जो सामान्य स्तर के लोग इन सामग्रियों के उपभोग से वंचित रह जाते हैं।

(11) मकानों के किराये का ऊँचा होना (High Rent of Residensial Houses) :-

नगरों एवं महानगरों में ग्रामीण क्षेत्रों से आये बेरोजगार युवकों की संख्या अपेक्षाकृत प्रतिर्ष बढ़ती जा रही है जिसके लिए आवास की कमी महसूस होती जा रही है। दूसरी बात यह है कि मकानों की संख्या सीमित है तथा किराये पर रहने के लिए युवकों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। अत: किराये की दर अधिक ऊँची है। हालाँकि उच्चे किराये की दर के कारण कछ मकान खाली भी रह जाते हैं किन्तु गरीब इंसानों को इसकी सुविधा नहीं मिल रहा है।

(12) Urban Blight :-

प्राय: ऐसा देखा जाता है कि नगरों एव महानगरों में स्थान के अभाव में ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं एपार्टमेंट का निर्माण किया गया है परन्तु पूर्व से निर्मित उनके मध्य एक छोटी सी झोपड़ी पट्टीनुमा गृह सा बना हुआ है या अहालिकाओं के मध्य एक खण्डहर भी स्थित है जो सामाजिक रूप में शोभनीय नहीं है। उससे उस नगर का स्तर प्रभावित होता है। यद्यपि उसकी निजी सम्पति होने के कारण उसके ढाँचा के बदलाव में उसे स्वतंत्रता है। अत: प्राय: ऐसी समस्या नगरों में देखने को मिलती हैं।

4.5 नगरीय समस्या हेतु समाधान या सुझाव (Suggestion for Urban Problems)

भारतीय नगरों में आये दिन समस्याएँ दिनो-दिन बढ़ती जा रही हैं जिनका निराकरण करना अति

आवश्यक है। नगरीय भूगोलवेत्ताओं ने नगरों में बढ़ती हुई समस्याओं के समाधान हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए हैं :-

भारतीय महानगरों में बढ़ती हुई जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए नगरवासियों को जनसंख्या नियंत्रक उपायों को अपनाना चाहिए। इसके लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाना अति आवश्यक है। इसके साथ ही उन्हे पुस्तकालय, मनोरंजन एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपना समय अधिक लगाना चाहिए। कार्य की अवधि में अधिक समय तक व्यस्त रहने पर नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की दर अपेक्षाकृत कम होगी तथा उन्हें अन्य साधनों जैसे निरोध, परिवार नियोजन आदि के प्रति अभिरूचि बढ़ानी चाहिए।

औद्योगिकीकरण का केन्द्रीयकरण न करके विकेन्द्रीकरण करना अति आवश्यक है। यदि बिहार, उत्तरप्रदेश आदि कृषि बहुल राज्यों में कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना की जाय तो ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवकों को समीपवर्ती छोटे शहरों एवं नगरों में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो जायेंगे। अत: वे महानगरों की ओर श्रमिकों का पलायन अपेक्षाकृत कम होगा। फलत: महानगरों की जनसंख्या में अपेक्षाकृत कम वृद्धि होगी। इसके लिए लघु उद्योगों की स्थापना स्वरोजगार गारंटी योजना का क्रियान्वयन अपेक्षित है।

नगरों एवं महानगरों में स्थान की समस्या अथवा आवासीय समस्या के समाधान हेतु औद्योगिक प्रतिष्ठानों के मालिकों को श्रमिकों हेतु उपनगरीय क्षेत्रों में क्वार्टर का निर्माण करना चाहिए। ऐसा करने पर उनका जीवन सरल हो जायेगा तथा उन्हें अधिक किराये-भाड़ा नहीं देना पड़ेगा तथा मलिन बस्तियों का उदय नहीं होगा।

(4) प्राय: मलिन बस्तियाँ निम्न जीवन स्तर को सूचित करती है। यदि नगर के वाह्य भाग में नगरपालिका या नगर निगम प्रशासनिक तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों के मालिकों द्वारा आवास की सुविधा उपलब्ध कराया जाय तो नगरों में मलिन बस्तियों दृष्टिगत नहीं होगी। फलत: नगर की गुणवता में वृद्धि हो सकेगी।

(5) नगरों एवं महानगरों में वर्तमान समय में सबसे जटिल मस्या प्रदूषण की है। प्राय: औद्योगिक कचरा को समीपवर्ती भाग मे सड़कों के किनारे या नदियों या नालों के माध्यम से नदियों तक पहुँचाना चाहते हैं जिससे नदियों का पवित्र जल तो प्रदूषित होता ही है तथा सम्पूर्ण नगर की वायु भी प्रदूषित हो जाती है। अत: जल प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण साथ-साथ होता है। इसके अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण की समस्या भी जटिल है।

(i) जल प्रदूषण रोकने के लिए गंदे जल को तथा नालियों के जल को विभिन्न तरीकों से शुद्ध करके नदियों में गिराया जाय। इससे नदियों का जल प्रदूषित नहीं होगा एवं पेय जल संकट को दूर करने में काफी हद तक मदद मिल सकेगी। दूसरी बात है कि जलापूर्ति हेतु पुराने एवं फटे पाइपों को बदल कर नये पाइपों को लगाना चाहिए ताकि उसमें नाली का पानी प्रवेश नहीं कर सके। साथ ही हौजों एवं टैंकों या पानी टंकी के नियमित रूप से सफाई अति आवश्यक है। पेय जलापूर्ति के लिए नगरों एवं महानगरों में जल विद्युत की आपूर्ति सुचारू रूप से होनी चाहिए।

(I) नगरों में वायु प्रदूषण के कई कारण हैं जिनमें वाहनों द्वारा निकले धुएँ तथा औद्योगिक चिमनियों द्वारा निकले धुएँ, कचरे, गंदे पदार्थ, सब्जियों के अवशिष्ट पदार्थों के सड़ने गलने आदि उल्लेखनीय है। इन स्रोतों द्वारा वायु प्रदूषण होता है।

(II) वायु प्रदूषण से बचने के लिए सबसे अच्छा उपाय है कि वाहनों में सी. एम. जी. आदि गैसों का इस्तेमाल किया जाय तथा विद्युत ईजनों द्वारा मेट्रो रेल का निर्माण एवं परिचालन किया जाय। ऐसा करने पर वायु प्रदूषण में कमी होने की संभावना है। मोटर वाहनों के सैलेंसर बदलना तथा उनके इंजनों की मरम्मत आदि उपायों द्वारा इस मसस्या का समाधान किया जा सकता है।

(III) ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए अधिक शोर करेनेवाले लाउडस्पीकर को ऊँची आवाज में बजाने पर पूर्णत: प्रतिबंध लगा देना चाहिए। साथ ही रात्रि 9 बजे के बाद इसका उल्लंघन करने वालों के विरूद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए। वाहनों में भी सैलेंसर लगाने से उनकी आवाज धीमी गति से निकलेगी फलत: ध्वनि प्रदूषण में कमी आयेगी।

(IV) औद्योगिक प्रदूषण से रक्षा के लिए औद्योगिक कचरे को नगरों से काफी दूर बाहर फेंक देना चाहिए तथा हर संभव उसे जला देना चाहिए। इससे उद्योगों द्वारा होनेवाले प्रदूषण में कमी आयेगी।

(IV) प्राय: नगरों में हार्दिक प्रेम, सौहार्द आत्मीयता, एक गोत्र-कुल-जाति समूह अथवा समुदायों की संख्या का अभाव पाया जाता है। दूसरी बात है कि प्रवासी पुरुष श्रमिकों एवं मजदूरों की संख्या अधिक होती है जिससे दूराचरण, वैविचारिक प्रवृति का बढ़ावा मिलता है। फलत: बलात्कार जैसे अपराध नगरों में आये दिन होते रहता है। इसके अतिरिक्त मद्यपान, चोरी, डकैती, गुण्डागर्दी, अपरहण लूट आदि की घटनाएँ घटती रहती हैं। यहाँ क्षेत्रीयता की भावना, जातिगत भावना एवं समुदायगत भावना की अधिकता रहती है।

इन अपराधों से निजात पाने के लिए सरकार को प्रशासनिक स्तर पर सख्त रहना चाहिए। प्रशासनिक एवं राजनैतिक प्रोत्साहन यदि अपराधियों को मिलना बंद हो जाय तो नगरीय अपराध में कमी आ जायेगी। हालॉकि प्रशासनिक स्तर से इसपर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।

नगरों में बढ़ते हुए वाहनों के कारण आये दिन यातायात बाधित होता रहता है। सड़कों पर घंटो वाहनों का काफिला दिखाई देता है तथा सड़के जाम रहती है, जिनके बीच से चलना भी दूभर हो जाता है। नगरों में सड़कों की संकीर्णता, वाहनों का अधिक परिचालन तथा खोमचे, ठेले या दुकानदारों या कचरे द्वारा सड़कें संकीर्ण होने के कारण यातयात बाधित होता है।

इस समस्या को सुधारने के लिए सड़कों का दीर्घीकरण तथा ओवरब्रीज (उपरीगामी सड़क पुल) का निर्माण आवश्यक है। इसके अलावे सड़कों के किनारे लगे दुकानों, ठेलों आदि को हटाने, कूड़ा-कचरों एवं नालियों की सफाई होने पर सड़कों पर गाड़ियों तेज रफ्तार से चलेगी। फलत: आवागमन हो जायेगा।

फलत: नगरवासी समय पर अपने दफ्तर विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, चिकित्सालय तथा व्यवसायिक केन्द्रों तक पहुँच सकेंगे।

नगरों में परिवहन के विविध साधनों द्वारा दुर्घटनाएँ घटित होती रहती है। वाहन चालकों द्वारा प्राय: नशे की हालत मोटर गाड़ियों का परिचालन किया जाता है। साथ ही सड़कें भी संकीर्ण है, फलत: प्रतिदिन दुर्घटनाएँ घटित होती रहती हैं।

दुर्घटनाओं को रोकने के लिए प्रशासनिक स्तर पर परिवहन के साधनों को सुचारू रूप से तथा यातायात के नियमों को पालन करते हुए परिचालन के नियमों का पालन करते हुए परिचालन के लिए निर्देश देना चाहिए तथा इस नियम के उल्लंघन करने वालों को कठोर सजा देनी चाहिए। चौराहे पर यातायात पुलिस बल को सदैव उपस्थित रहना चाहिए। स्थान-स्थान पर वाहनों का ठहराव (पड़ाव) का निर्माण अति आवश्यक है। पैदल चलनेवाले यात्री के लिए सड़कों पर अलग निशान लगा देना चाहिए इससे दुर्घटनाएँ कम हो सकती हैं।

प्राय: बड़े नगरों में बढ़ती जनसंख्या की दैनिक आपूर्ति के लिए प्रभाव क्षेत्रों से परिवहन के तीव्र साधनों द्वारा शाक-सब्जी, दही, दूध एवं दुग्ध-पदार्थ आदि पहुँचाये जाते हैं। अत: सड़कों की मरम्मत होनी चाहिए। अच्छी सड़कों के माध्यम से कम समय में ग्रामीण क्षेत्रों से ताजी सब्जियाँ तथा दुग्ध पदार्थों की आपूर्ति होती रहेगी तथा नगरवासियों को लाभ मिलता रहेगा।

उपर्युक्त सुझावों को यदि अपनाया जाय तो नगरीय समस्याओं का कुछ हद तक समाधान हो सकता है। अत: प्रशासनिक स्तर पर तथा नगरवासियों को उपर्युक्त सुझावों का पालन करना चाहिए।

4.6 निष्कर्ष (Summing-up)

इस अध्याय में अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे Summing-up कि 20वीं सदी में नगरों के आकार में आशातीत वृद्धि हुई। दूसरी ओर बढ़ती हुई जनसंख्या की माँग की पूर्ति हेतु औद्योगिक विकास भी हुआ। फलत: औद्योगिक पदार्थों के उत्सर्जन, परिवहन के साधनों, पोलिथिन एवं रासायनिक उद्योगों के विकास के साथ-साथ प्रदूषण में वृद्धि हुई बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पदार्थों की आपूर्ति उचित मात्रा में नहीं हो पाती है। साथ ही अन्य समस्याएँ भी नगरवासियों के समक्ष आती रहती हैं, जिनका विशद वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

4.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

(1) भारतीय नगरों में उत्पन्न मुख्य समस्याओं का वर्णन कीजिए।

(Discuss the main problems of Urban Centres (Urbanization) in India.

(2) भारतीय नगरों में उत्पन्न मुख्य समस्याओं के समाधान के लिए अपना सुझाव दीजिए।

(Give your suggestions to eradicate the problems regarding urbanization in India.

(3) भारतीय नगरों के साथ कई समस्याएँ हैं। परीक्षण करें।

(Indian cities have so many problems. Examine it).

4.8 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

(1) भारत का भूगोल - गौतम, डॉ. अलका

(2) भारत का भूगोल - चौहान, बी. एस. एवं गौतम, अलका

(3) नगरीय भूगोल - डॉ० सुरेश चन्द्र बंसल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ

(4) भारत का भूगोल- मामोरिया, डॉ. चतुर्भुज।

❖❖❖

भारत की जनसंख्या नीति
(Population Policy of India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)
5.1 परिचय (Introduction)
5.2 जनसंख्या परिवर्तन एवं जनसंख्या नीति के बीच संबंध (Relation Between Population Policy and Change of Population)
5.3 भारत में जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या नीति की आवश्यकता (Need for Growth of population in India and Population Policy)
5.4 भारत में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ एवं उनका समाधान (Problems Due to Growth of Population and Their Solution)
5.5 भारत की जनसंख्या नीति एवं उसके प्रभाव (Population Policy in India and Their Effect)
5.6 निष्कर्ष (Summing-up)
5.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)
5.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय में हम जान पायेंगे कि भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या से कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, जिनमें निर्धनता, कुपोषण, खाद्य संकट, बेरोजगारी, पर्यावरण अवनयन आदि उल्लेखनीय है। भारत में जनसंख्या की वृद्धि की दर 1901 से 1931 के मध्य तक धीमी रही परन्तु 1951-1981 तथा 2001 तक वृद्धि की दर अधिक रही। इसे नियंत्रित करने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय सरकार ने परिवार नियोजन जैसे कार्यक्रम लागू किए। इस कार्यक्रम को 1971 ई० के बाद अधिक प्रभावी किया गया तथा देशवासियों को विभिन्न प्रकार के आर्थिक प्रोत्साहन को प्राथमिकता दी गयी। भारतीय दम्पतियों को यह सलाह दी गयी कि बन्ध्याकरण तथा परिवार नियोजन जैसे कार्यक्रम को अपनाएँ तथा देश को जनसंख्या

विस्फोट से बचाएँ। देशवासियों के सहयोग से जन्म दर में कमी आयी तथा चिकित्सा के उत्तम प्रबंध से मृत्यु दर में भी कमी आयी। वर्ष 2000 ई० में भारतीय सरकार ने राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा की तथा इसे पालन करने पर बल दिया। इस नयी नीति को लागू करने पर भविष्य में छोटा परिवार सुखी परिवार का सपना पूरा हो सकेगा तथा भारत विश्व का एक शक्तिशाली एवं समृद्धशाली देश बन जायेगा। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति इस अध्याय का केन्द्र बिन्दु है।

5.1 परिचय (Introduction)

मानव एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इसका मुख्य उद्देश्य भौगोलिक तत्व के साथ-साथ पृथ्वी पर पाये जानेवाले समस्त प्राकृतिक पदार्थों को संसाधन के रूप में विकसित करना है। मानव जल, भूमि, मिट्टी, खनिज शक्ति संसाधनों, प्राकृतिक वनस्पतियों, जीव-जन्तुओं आदि उल्लेखनीय संसाधनों का उपयोग करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कृषि, पशुपालन, वस्तुओं का निर्माण, औद्योगिक विकास करता है। मानव अपने ज्ञान से सभी संसाधनों का विकास करता है।

वह अपनी शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संस्कृति का निर्माण करता है। अत: मानव एक महत्वपूर्ण संसाधन है तथा भौगोलिक अध्ययन का मुख्य केन्द्र बिन्दु है। जनसंख्या की वृद्धि, वितरण, घनत्व, साक्षरता, उसकी कार्यकुशलता, यौन-अनुपात आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव संसाधन पर ही राष्ट्र विशेष का भविष्य निर्भर है। भारत विश्व का दूसरा (चीन के बाद) सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र है। 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ 102.70 करोड़ जनसंख्या निवास करती हैं तथा यहाँ साक्षरता की दर 65.38% है। यहाँ जनसंख्या की वृद्धि दर 1901 से 1921 के मध्य 5.4 प्रतिशत, 1921 से 1951 के मध्य 14.6 प्रतिशत, 1951 से 1961 के मध्य 21.6 प्रतिशत, 1961 से 1971 के मध्य 24.8 प्रतिशत, 1971 से 1981 के मध्य 24.6 प्रतिशत, 1981 से 1991 के मध्य 23.86 प्रतिशत तथा 1991 से 2001 के मध्य 21.34 प्रतिशत रही। स्पष्ट है कि भारत में जनसंख्या की वृद्धि तीव्र गति से हो रही है। इस बढ़ती जनसंख्या के कारण देश में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होने लगी हैं। देश में 1901 से 1921 के मध्य विविध प्रकार की महामारियों तथा अकाल आदि उल्लेखनीय प्रकोपों के कारण लाखों व्यक्ति काल-कलवित हो गये। फलत: जनसंख्या की वृद्धि शिथिल रही। ब्रिटिश शासन काल में भी चिकित्सा के समुचित प्रबन्ध नहीं किए गए। इस कारण शिशु मृत्यु दर भी अधिक थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् चिकित्सा, सिंचाई, कृषि, उद्योग, शिक्षा, कृषि के लिए नयी तकनीकि सुविधाएँ आदि उल्लेखनीय सुविधाओं पर जोर दिया गया। फलत: शिशु मृत्यु दर महामारियाँ से मृत्यु एवं मातृत्व मृत्यु दर में कमी आयी। फलत: जनसंख्या में वृद्धि होने लगी तथा इससे देश के समस्याएँ उत्पन्न होने लगी। देश में जनसंख्या की अधिक वृद्धि के कारण खाद्य संकट उत्पन्न हो गया। देश में कुपोषण, भोजन की समस्या, बेरोजगारी, पर्यावरण अवनयन आदि उलेखनीय समस्याएँ उत्पन्न होने लगी। भारतीय सरकार ने देश में खाद्य संकट को दूर करने के लिए सिंचाई के विविध साधनों का विकास किया, उन्नत बीज, उचित मात्रा में उर्वरक की उपलब्धि कीटनाशक दवाओं आदि की आपूर्ति पर सूक्ष्म रूप से ध्यान दिया गया। देश में हरित क्रांति लाने के लिए हर संभव प्रयास किया गया तथा इसके द्वारा खाद्यान्नों के अधि